

ओ३म्

अधिमना यः अधिकृत् स्वर्षः (साम. 1179)

हम अधिमना होकर प्रभु की प्रभा को प्राप्त करें।

श्री जिज्ञासु स्मारक पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी का मुखपत्र

महर्षि

पाणिनि-प्रभा



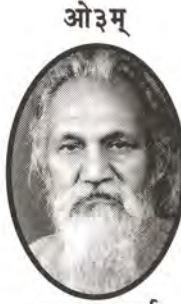
पाणिनि कन्या महाविद्यालय में पधारे मेघालय के राज्यपाल  
श्री गंगाप्रसाद चौरसिया पाणिनि परिवार के साथ

जनवरी 2018 से अस्सी घाट पर प्रति पूर्णिमा को  
कलानिधि द्वारा आयोजित शास्त्रार्थ में भाग लेती पाणिनि कन्यायें





महीयसी संस्थापिका  
डॉ० प्रज्ञा देवी जी



पूज्य गुरुवर्य

श्री पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जी

# महर्षि पाणिनि-प्रभा



महीयसी संस्थापिका  
अनुजा-आचार्या मेधा देवी

सृष्टि संवत् १,९७,२९,४९,११८

संयुक्तांक अप्रैल-अगस्त, २०१८

वर्ष १२, अंक-१

चैत्र-भाद्रपद, वि.सं. २०७५



सम्पादिका  
आचार्या नन्दिता चतुर्वेदी  
मो०- 9235539740

सहसंपादिका  
डा० प्रीति विमर्शिनी  
मो०- 9235604340

प्रकाशक  
पाणिनि कन्या महाविद्यालय  
पो०- महमूरगंज, तुलसीपुर,  
वाराणसी- 221010 (उ०प्र०)

Regd. no. VSI(W)55/2014-2015

पत्रिका संबंधी सम्पर्क नं.

08736807436

पत्रिका सदस्य

वार्षिक : 150/-

आजीवन : 1500/- (दस वर्ष)

## प्रभा-रश्मयः

2. शुभकामना सन्देश- 2-4
5. वेद-वाणी- हम सविता देव का उपह्वान करें- आचार्या नन्दिता शास्त्री 5-7
6. सम्पादकीयम् - शिक्षा का उद्देश्य राष्ट्र निर्माण - डॉ. प्रीति विमर्शिनी 8-11
7. इतिवृत्तम् - दिव्या आर्या 12-16
8. शास्त्रार्थ विवरण- प्राची आर्या 17-18
9. गुरु विरजानन्द जी दण्डी को शत-शत नमन- डॉ. रामप्रकाश 19-22
10. सत्यार्थ प्रकाश का हिन्दी लिखा जाना- मनमोहन कुमार... 23-26
11. स्मृतिशेष डॉ. भवानीलाल भारती 27
11. अटल जी और आर्यसमाज- धर्मपाल जी आर्य 28-30
12. हमारा ज्योतिष और धर्मशास्त्र... डा. हरिहर पाण्डेय 31-33
13. हम भारत से क्या सीखे- प्रो. मैक्समूलर 34-36
14. संक्षिप्त परिचय, गतिविधियाँ, उद्देश्य व सहयोग- 37-40

Webside- [www.paninikanyagurukul.org](http://www.paninikanyagurukul.org), E-mail- [paninikm@gmail.com](mailto:paninikm@gmail.com)

योगी आदित्यनाथ



मुख्य मंत्री  
उत्तर प्रदेश



सुश्री आचार्या नन्दिता शास्त्री जी,

रक्षा बन्धन के पावन पर्व पर आपका बधाई पत्र व आपके द्वारा भेजी गयी राखी प्राप्त हुई। धन्यवाद।

रक्षा बन्धन प्यार, विश्वास और सौहार्द की भावना को उजागर व सुदृढ़ करने का पर्व है। यह त्योहार सिर्फ बहन की रक्षा करने का संकल्प नहीं, बल्कि उसकी सुख-समृद्धि की मंगल-कामना का भी प्रतीक है। रक्षा सूत्र का एक-एक धागा भाई-बहन के रिश्ते को मजबूती प्रदान करता है।

आपके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं सहित।

आपका

  
( योगी आदित्यनाथ )

सुश्री आचार्या नन्दिता शास्त्री,  
पाणिनि कन्या महाविद्यालय,  
पो० महमूरगंज, तुलसीपुर,  
जनपद वाराणसी।



सत्यमेव जयते

प्रधान मंत्री  
Prime Minister

नई दिल्ली  
24 सितंबर, 2018

सुश्री नन्दिता शास्त्री जी,

आपकी राखी पाकर अत्यंत प्रसन्नता हुई है। देशवासियों से मिलने वाली शुभकामनाएं एक नए उत्साह के साथ कार्य करने की ऊर्जा व प्रेरणा देती हैं।

आपके अच्छे स्वास्थ्य और सुखद भविष्य की कामना के साथ रक्षाबंधन के पावन पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं।

आपका,

(नरेन्द्र मोदी)

सुश्री नन्दिता शास्त्री  
आचार्या  
पाणिनी कन्या महाविद्यालय  
पोस्ट- महमूरगंज  
तुलसीपुर, वाराणसी  
उत्तर प्रदेश- 221010

प्रिय बहिन नन्दिता जी,

सस्नेह प्रणाम।

आप द्वारा प्रेषित रक्षासूत्र व शुभाशंसा सन्देश प्राप्त हुए। इसके लिये बहुत-बहुत आभार है। स्नेह एवं उत्कर्ष भाव स्वरूप एक चेक भेज रहा हूँ कृपया बड़े भाई का आशीष प्रतीक को स्वीकार कर अनुगृहीत करना।

आपके विद्यालय की कन्याओं एवं आप लोगों ने एक इतिहास लिखा है और नित्य इस दिशा में दयानन्द निर्दिष्ट आर्षधर्मिता के क्रियान्वयन में सर्वात्मना संलग्न हैं, यह हमारे लिए, देश एवं समाज के लिए एक प्रखर आदर्श है।

समस्त भारत मातृशक्तियों को स्नेहाशीष एवं प्रणाम।

भवदीय भ्राता

प्रो. रूपकिशोर शास्त्री

पूर्व सचिव- म.सा.रा.वे.वि.प्र., उज्जैन  
(मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार)

### विशेष सूचना:-

इस वर्ष अपने पाणिनि कन्या महाविद्यालय का वार्षिकोत्सव 6,7,8 (गुरु., शुक्र., शनि.) दिसम्बर को होना सुनिश्चित हुआ है। इस अवसर पर आप सभी सादर आमन्त्रित हैं।

कृपया अभी से अपना आरक्षण सुरक्षित करवा लें।

# वेद-वाणी

हम सविता देव का उपह्वान करें—

ओ३म् रातिं सत्पतिं महे सवितारमुपह्वये।  
आसवं देववीतये॥

— यजु. 22/3

यह मन्त्र यजुर्वेद का है। इसका देवता सविता है। इसी के साथ इसके आगे पीछे के कुल 7 मन्त्रों का देवता भी सविता ही है। **सविता सर्वस्य प्रसविता** (निरु. 10/3/31) सविता वह देवता है जो सबका प्रेरक सबका उत्पादक और सारे ऐश्वर्यों का हेतु है। सविता नाम सूर्य का भी है जिसमें ये सारे अर्थ घटित होते हैं। सविता परमपिता परमेश्वर है साथ ही सविता वह आचार्य भी है जो अपने गर्भ में अन्तेवासी (शिष्य) को धारण कर उसे द्विज बनाता है उसका प्रेरक और उसके जीवन को सत्पथगामी बना कर उसे संसार के ऐश्वर्यों से जोड़ देता है।

मन्त्र में सविता के तीन विशेषण दिये हैं— **रातिं सत्पतिं आसवं** (सवितारम्)। **राति का अर्थ** है दानशील, दानस्वभाव से युक्त, सविता का यह विशेषण बहुत महत्वपूर्ण है यदि ये दान स्वभाव से युक्त न हों तो संसार का कल्याण नहीं हो सकता। **सत्पति का अर्थ** है सत् का पति सत् अर्थात् सद्ज्ञान सद्दिचार सत्यशील सद्जनों का रक्षक

स्वामी। तीसरे विशेषण **आसव का अर्थ** है वह मूर्त अथवा अमूर्त द्रव्य जो पेय है ग्राह्य है, ज्ञेय है, अभिषुत है। ये तीनों विशेषण सविता रूप सूर्य, परमेश्वर और आचार्य में पूर्णरूप से घटित होते हैं। सविता का अर्थ यज्ञ भी हो सकता है संसार के समस्त भौतिक अभौतिक ऐश्वर्य हम यज्ञ के द्वारा प्राप्त करें यह यजुर्वेद के 18वें अध्याय में **यज्ञेन कल्पन्ताम्** शब्द से स्पष्ट है। इनका मैं, हम सब **उपह्वये** पास पहुँच कर सान्निध्यपूर्वक आह्वान करें स्तवन करें। जिससे हम इनके अनुकूल अनुरूप बन सकें तथा ये हमारे अनुकूल बन सकें। प्रश्न होता है क्यों? किसलिये हम इनका उपह्वान करें किसलिये इनकी उपासना, इनके सान्निध्य की अपेक्षा करें क्योंकि **प्रयोजनमनुद्दिश्य मन्दोऽपि न प्रवर्तते** बिना प्रयोजन के तो मन्दमति भी किसी कार्य में प्रवृत्त नहीं होता। तो मन्त्र में ही उत्तर दिया दो शब्दों से— **महे, देववीतये**। महे- अर्थात् महान् बनने, सद्ज्ञान सद्दिचार, सदाचरण के द्वारा समाज में पूज्य मानव बनने के लिये (मह पूजायाम्) तथा **देववीतये**

मनुष्य ही नहीं मनुष्य से ऊपर देव बनने के लिये हम इनका आह्वान नहीं अपितु उपह्वान करें।

अथर्ववेद में कहा है यह जो सविता है वह संसार के सारे प्रसवों का अधिपति है। **सविता प्रसवानामधिपतिः** (अथर्व. 5/24/1) प्रसव का अर्थ है उत्पत्ति, प्रेरणा, ऐश्वर्य जिनका अधिपति वह परमेश्वर वह सूर्य वह आचार्य और यज्ञ है। ये हमारी सर्वत्र मेरे जीवन के हर कदम पर मेरी रक्षा करें यह बात विस्तार से वहाँ इस प्रकार कही है- **अस्मिन् ब्रह्मणि** इस ब्रह्म अर्थात् अध्यात्म ज्ञान, **अस्मिन् कर्मणि** इस वैदिक कर्म, इस **पुरोधे** = संमुख स्थित पुरुषार्थ सिद्धि, इस प्रतिष्ठा, चेतना वेदज्ञान की **आकूति** (संकल्प) **आशिषि** (इच्छापूर्ति) **देवहूति** देवयज्ञादि कर्म जिसमें देवों का आह्वान किया जाता है इन सभी की पूर्ति में वे सर्वत्र हमारी रक्षा करें। वस्तुतः ये सविता रूप आचार्यादि हमारी इसी प्रकार रक्षा करते हैं। पर किनकी रक्षा करते हैं यह भी जानना आवश्यक है तो वेदमन्त्रों में ही बताया वे उनकी रक्षा करते हैं जो उनकी आज्ञा का, आदेश का, निर्देश का पालन करते हैं। अन्यथा कभी भी कोई भी किसी को किसी भी अज्ञानान्धकार ढोंग पाखण्ड के कुएं में गिरने से नहीं रोक सकता। यजुर्वेद में बताया-

**देवस्याहं सवितुः सवे सत्यसवसो बृहस्पते-  
रुत्तमं नाकं रुहेयम्। ..... इन्द्रस्योत्तमं नाकं**

**रुहेयम्। देवस्याहं सवितुः सवे सत्यप्रसवसो  
बृहस्पतेरुत्तमं नाकमरुहम्। ..... इन्द्रस्योत्तमं  
नाकमरुहम्॥ यजु. 9.10**

अर्थात् हम सविता देव की **सवे** = आज्ञा में, प्रेरणा में **सत्यसवसो बृहस्पतेः** सत्य के प्रेरक, जनक बृहस्पति और इन्द्र के उत्तम **नाक** = दुःखरहित आनन्द लोक की ओर आरोहण करें। आगे मन्त्र में कहा कि उस आनन्द नाक लोक पर **अरुहम्** = मैंने आरोहण कर लिया है। कैसे? तो उनकी आज्ञा का पालन करते हुए उनके निर्देशानुसार अपना जीवन बना कर।

यजुर्वेद में तो आरम्भ से ही सविता देव से प्रार्थना की गई है। वहाँ प्रथम मन्त्र में ही कहा-

**देवो वः सविता प्रार्थयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणे।**

- यजु. 1/1

अर्थात् सविता देव हमें श्रेष्ठतम वैदिक कर्म करने के लिये उन कर्मों के प्रति वैदिक आज्ञाओं के पालन के प्रति हमें निरन्तर प्रेरित ही नहीं समर्पित करे। वस्तुतः बिना समर्पण बिना निष्ठा के वैदिक आज्ञा का, सविता रूप आचार्य देवता के अनुशासन का, नियम का पालन करना असम्भव है। सबसे बड़ी बात हम इन आज्ञाओं को अपने हृदय से गले से लगायें। तभी हम उन आज्ञाओं का पालन करने के लिये उद्यत हो सकेंगे। इस ब्रह्माण्ड में सविता सूर्य ही सबका प्रत्यक्ष

प्रेरक है। प्रातः सूर्योदय से पूर्व उठना और उदित होते हुए सूर्य को आहुति देना देवयज्ञ करना यह वैदिक विधान है जो कि प्रत्येक मनुष्य का अनिवार्य कर्म है। आज की पर्यावरण जन्य, मनोविकार जन्य बहुत सी विभीषिकाओं का यही एकमात्र समाधान है। सूर्य हमारा प्राण है हमारा जीवन है यहीं नहीं वेद में तो यहाँ तक कह दिया कि सूर्य हमारी आत्मा है- **सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा** और मेरा यह कथन स्वाहा अर्थात् पूर्ण सत्य है।

गुरुकुल में आचार्य को सूर्य कहा है **सूर्यस्यावृतमन्वावर्त्तस्व** जैसे सूर्य की परिधि में सूर्य के आकर्षण में लोक लोकान्तर स्थित हैं हम सब हैं उसी प्रकार गुरुकुल में आचार्य की परिधि आचार्य के आकर्षण, अनुशासन में विद्यार्थी अन्तेवासी को रहना चाहिये। उसी के इर्द-गिर्द उसी की परिक्रमा में जैसे ध्रुलोक में ग्रह उपग्रह नक्षत्र रहते हैं उसी प्रकार विद्यार्थियों को परिजनों को भी रहना चाहिये यह निर्देश आचार्य यज्ञोपवीत संस्कार करते हुए आरम्भ में ही ब्रह्मचारियों व ब्रह्मचारिणियों को देता है।

यजुर्वेद के इस सविता देवता वाले मन्त्रों में सविता के जो विशेषण हैं वे ध्यातव्य हैं। मन्त्रों में कहा वह **हिरण्यपाणि** है, यह विशेषण बहुत ही महत्वपूर्ण है सविता रूप आचार्य के लिये। क्योंकि मनुस्मृति में आचार्य का, गुरु का जो कर्तव्य बताया

है, वहाँ कहा है-

**सामृतैः पाणिभिर्घ्नन्ति गुरवो न विषोक्षितैः।  
लालनाश्रयिणो दोषास्ताडनाश्रयिणो गुणाः॥**

अर्थात् आचार्य विद्यार्थियों का ताडन अमृत से सने हाथों से करे विष से सिंचित नहीं, क्योंकि समय-समय पर आवश्यकतानुसार विद्यार्थियों का ताडन करने से उनमें गुणों की अभिवृद्धि होती है जब कि केवल लालन करने से दोष बढ़ते हैं। यह तभी सम्भव है जब वह हिरण्यपाणि बने। **हिरण्यपाणि का अर्थ है हितरमणीय पाणि** अर्थात् वह पाणि (हाथ) जो विद्यार्थी का हित करे उन्हें स्नेह दे, सान्त्वना दे। दूसरा विशेषण दिया **सुमतीवृधः** जो हमारी सुमति = कल्याणकारिणी बुद्धि को हमें व्यर्थ के प्रतिस्पर्द्धात्मक सघर्षों से बचा कर आगे बढ़ाने वाला हो। तीसरा विशेषण दिया- **देवस्य चेततः** ये देवों की दिव्यता की जीवन्त चेतना हैं। ऐसे सविता देव की **विश्वदेव्यम् आसवं मतिम् मनामहे** जो मेरे सम्पूर्ण तन मन बुद्धि आत्मा को दिव्यता प्रदान करने वाला मेरे लिये आसव रूप है जिसका मुझे सवन नहीं करना केवल पान करना है ऐसी मति बुद्धि की मैं याचना करता हूँ। हे प्रभो! हे आचार्य रूप सविता देव! आप मुझे अपना बनायें अपनी कृपा का पात्र बनायें! मेरी आपसे बारम्बार यही प्रार्थना है! यही निवेदन है! □

— आचार्या नन्दिता शास्त्री

## सम्पादकीयम्

### शिक्षा का उद्देश्य— राष्ट्र निर्माण—

शिक्षा एक सुदृढ़ परिवार समाज एवं राष्ट्र की रीढ़ है। शिक्षा से शिक्षित व्यक्ति ही स्वस्थ परिवार समाज एवं राष्ट्र का निर्माण कर सकता है। जिस परिवार समाज एवं राष्ट्र में जितने व्यक्ति सुशिक्षित होंगे उतना ही वह परिवार समाज एवं राष्ट्र सुशिक्षित एवं विकसित होगा। क्योंकि शिक्षा व्यक्ति परिवार और राष्ट्र निर्माण की प्रणाली है शिक्षा के द्वारा व्यक्ति का बौद्धिक, मानसिक, आत्मिक एवं शारीरिक सर्वांगीण विकास होता है। इस विकास क्रम में सामाजिक और राष्ट्रीय मूल्य उसके व्यक्तित्व में समवेत होते हैं। शिक्षित होकर व्यक्ति समाज और राष्ट्र का सदस्य बनता है। यद्यपि व्यक्ति इस विकास का केन्द्र है तथापि यह मानव तक ही सीमित न रहकर यह विकास की परिधि परिवार समाज और राष्ट्र में फैलती है। व्यक्तियों के विकास की परिधियाँ मिलकर ही राष्ट्र का मण्डल बनाती हैं। जिसके अन्तर्गत व्यक्ति का पूर्ण विकास होकर व्यक्ति का अस्तित्व सार्थक होता है। मानव के सर्वांगीण विकास में ज्ञान के अतिरिक्त भाव, कर्म, चरित्र, कला, राष्ट्रीयता आदि का विकास भी सम्मिलित होता है। जो कि मात्र व्यक्तिगत न होकर सामाजिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों के समन्वय से ही सम्पन्न होते हैं। इस प्रकार व्यक्ति के विकास के माध्यम से शिक्षा राष्ट्र का विकास एवं निर्माण करती है। इस शिक्षा का अन्तिम लक्ष्य मानवता, धार्मिकता, संस्कृति, राष्ट्रीयता अथवा समाज, राष्ट्र एवं विश्व निर्माण कहा जा सकता है। किन्तु आज सभी राष्ट्र अपनी सीमाओं में बँधे होने के कारण शिक्षा का ये लक्ष्य केवल सैद्धान्तिक या वैचारिक ही बना हुआ है। जो केवल पुस्तकों गोष्ठियों निबन्धों आदि के माध्यम से एक दूसरे तक विचारों के रूप में हस्तान्तरित हो रहा है। व्यावहारिक रूप से आज भी शिक्षा के इस महत्वपूर्ण लक्ष्य से हम कोसों दूर हैं।

प्राचीन काल में हमारे देश में शिक्षा का कार्य एक महनीय एवं उत्कृष्ट कर्म माना जाता था तथा उसका उद्देश्य चारित्रिक विकास एवं मानव निर्माण के साथ-साथ राष्ट्र निर्माण भी था। जिससे एक सुशिक्षित विचारशील, चरित्रवान् मनुष्यों से युक्त उन्नत राष्ट्र की सर्जना हो सके।

वस्तुतः शिक्षा के उद्देश्य को जब तक जीवन के उद्देश्य के साथ नहीं जोड़ा जायेगा तब तक सम्पूर्ण गुणवत्ता युक्त शिक्षा, राष्ट्रोन्नति मूलक शिक्षा की व्यवस्था से हम कोसों दूर रहेंगे। यही कारण है कि आज स्वतन्त्रता प्राप्ति के 70 वर्ष व्यतीत होने पर भी एक आदर्श गुणवत्ता मूलक शिक्षा की व्यवस्था विद्यार्थियों को प्राप्त नहीं हो सकी।

मानव जीवन का उद्देश्य पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति है पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति के योग्य मानव का निर्माण कर देना ही शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है यही मानव का सर्वांगीण विकास है जिसमें धर्म भी है अर्थ भी है काम भी है और मोक्ष भी है।

भौतिक और आध्यात्मिक समृद्धि के मध्य का संतुलित दृष्टिकोण ही पुरुषार्थ का सही स्वरूप है तथा यह भौतिक और आध्यात्मिक समृद्धि के मध्य संतुलित जीवन पद्धति की प्रक्रिया मनुष्य शिक्षा से ही प्राप्त कर सकता है और वह भी वर्तमान प्रचलित मैकाले की शिक्षा पद्धति से नहीं अपितु प्राचीन वैदिक शिक्षा प्रणाली के माध्यम से जिस शिक्षा का प्रारम्भ पुरुषार्थ चतुष्टय के महत्त्वपूर्ण प्रथम अंग धर्म से होता है। महर्षि कणाद ने वैशेषिक दर्शन के प्रथम सूत्र में— अथातो धर्म जिज्ञासा कहकर धर्म की चर्चा करने की प्रतिज्ञा करते हुए द्वितीय सूत्र में— “यतोऽभ्युदयनिःश्रेयस सिद्धिः स धर्मः” कहकर धर्म का लक्षण करते हुए वस्तुतः मानव जीवन के चरम लक्ष्य का सूत्र बता दिया तथा साथ ही साथ शिक्षा का उद्देश्य भी।

महर्षि कणाद की दृष्टि में धर्म कोई बाह्य आडम्बर की पूजा आदि कर्मकाण्ड की वस्तु नहीं अपितु धर्म तो मानव जीवन की वह अमूल्य निधि है जिन व्यवहारों से जिस शिक्षा से मनुष्य अभ्युदय = ऐहलौकिक भौतिक सुख तथा निःश्रेयस = पारलौकिक आध्यात्मिक सुख की सिद्धि प्राप्ति कर सके वही धर्म है। वस्तुतः यही तो शिक्षा का उद्देश्य है इसे ही तो हमें शिक्षा के माध्यम से सीखना है। यजुर्वेद के 40वें अध्याय में—

**विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह।**

**अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते॥**

(यजु. 40/14)

इस मन्त्र में भी विद्या एवं अविद्या के स्वरूप को इसी सन्दर्भ में परिभाषित किया है। यहाँ विद्या से तात्पर्य निःश्रेयस अर्थात् आध्यात्मिक विद्या तथा अविद्या से अज्ञान नहीं अपितु नजिवयुक्त न्याय से विद्या भिन्न तथा विद्या के सदृश कर्म अर्थात् अभ्युदय अर्थात् ऐहलौकिक भौतिक सुख दोनों को अपने जीवन में धारण करने वाला व्यक्ति ही जीवन के परमतत्त्व परमलक्ष्य अमृतत्व मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है। विद्यया अमृतमश्नुते। यही तो शिक्षा का उद्देश्य है क्योंकि शिक्ष विद्योपादाने— धातु से अङ् प्रत्यय करके शिक्षा शब्द निष्पन्न होता है। जिसका अर्थ है विद्या को ग्रहण करना प्राप्त करना अधिगम करना। विद्या दो प्रकार की होती है परा अपरा मुण्डकोपनिषद् में—

द्वे विद्ये वेदितव्ये परा अपरा चेति तत्र या पृथिवी तृणमारभ्य प्रकृतिपर्यन्तानां पदार्थानां यथावद् उपकारग्रहणं क्रियते सा अपरोच्यते। यया च अदृश्यादि विशेषणयुक्तं सर्वशक्तिमद् ब्रह्म विज्ञायते सा परा अर्थात् अपरायाः सकाशाद् अत्युत्कृष्टा अस्तीति वेद्यम्।

अर्थात् पृथिवी से लेकर तृण पर्यन्त पदार्थों के गुण, धर्म, स्वभाव को जानकर उनका उपयोग लेकर भौतिक सुखों को प्राप्त करना जिससे मृत्यु के सामान्य कारण क्षुधा पिपासा शीत आतप वृष्टि आदि से अपनी रक्षा करते हुए भौतिक सुख को प्राप्त करना ही उपनिषद् के शब्दों में अविद्या तथा दर्शन के शब्दों में अभ्युदय सिद्धि है। किञ्च— **यया तदक्षरम् अधिगम्यते।** अर्थात् जिस आत्म विद्या के द्वारा उस अक्षर नित्य निराकार निर्विकार परमात्मा को जानते हैं उसका साक्षात्कार करके शाश्वत् आनन्द मोक्ष की प्राप्ति करते हैं वह उपनिषद् के शब्दों में परा विद्या, वेद के शब्दों में विद्या तथा दर्शन के शब्दों में निःश्रेयस सिद्धि है तथा इन दोनों परा-अपरा विद्या को जानना ही शिक्षा का उद्देश्य है।

प्रश्न उठता है इतने महान् शिक्षा के उद्देश्य को वर्तमान प्रगतिशील समाज में कैसे चरितार्थ किया जाए तो इसका सर्वसम्मत उत्तर है वेद एवं वैदिक प्रणालियाँ जो कि सर्वकाल के लिए उपादेय हैं।

यदि प्राचीन वैदिक परम्पराएँ वर्तमान युग के ज्वलन्त प्रश्न की समस्याओं का समाधान नहीं कर सकती तो वे हमारे लिए अनुपयोगी एवं त्याज्य हो जाएँगीं। परन्तु प्राचीन वैदिक प्रणाली ऐसी नहीं है वह तो सर्वकालोपयोगी है। प्राचीन काल में शिक्षा सभी के लिये अनिवार्य थी क्योंकि शिक्षा केवल भौतिक सुख सम्पत्ति एकत्रित करने के उद्देश्य से ही नहीं अपितु जीवन के उद्देश्य से जुड़ी थी। अतः जो माता-पिता अपने बालकों को गुरुकुलों में विद्याध्ययन करने नहीं भेजते थे उन्हें दण्ड का विधान था। साथ ही 24 वर्ष से पहले कोई भी बालक या बालिका कार्यक्षेत्र में अथवा गृहस्थाश्रम में प्रवेश न कर अपितु पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत पालन कर ज्ञान रूपी अग्नि से प्रदीप्त होकर कार्यक्षेत्र में अवतरित होता था।

वैदिक शिक्षा पद्धति में शिक्षा के लिये समुचित वातावरण, सामाजिक पर्यावरण, आचार्य शिक्षक, पाठ्यक्रम, अध्यापन प्रणाली ये सभी शिक्षा के महत्त्वपूर्ण घटक हैं। जिसमें से पाठ्यक्रम अर्थात् अध्ययन के विषय में चर्चा करते हुए आचार्य कहता है “**अग्नीषोमाभ्यां त्वा जुष्टं निर्वपामि**” अर्थात् हे शिष्य मैं तुम्हें अग्नि एवं सोम से युक्त करता हूँ। ज्ञान के दो प्रकार हैं आग्नेय (शास्त्रीय) सौम्य (प्रायौगिक) अर्थात् आध्यात्मिक एवं भौतिक, व्यक्तिपरक एवं समष्टिपरक, ज्ञान तथा भावना, विज्ञान तथा ललित कला, आचार तथा विचार दोनों का ही शिक्षा में उचित समावेश होना चाहिए तभी यह विद्या व्यवहारोपयोगी हो सकती है। दोनों प्रकार की विद्या को विद्यार्थी पढ़ें परन्तु वो इतनी एकाकार हो जायें कि वे एक दूसरे के उपकारक हों संहारक नहीं।

यही तो ज्ञानपूर्वक कर्म है पश्चात् वही ज्ञानपूर्वक कर्म जब लोकोपयोगी व्यवहारोपयोगी बन जाए यही उपासना है। इसी प्रकार यजुर्वेद में बहुत ही रोचक प्रकार से शिक्षा के उद्देश्य को बताया है।

**सं वपामि समाप ओषधीभिः समोषधयो रसेन। सं रेवती जगतीभिः पृच्यन्ताम्। सं**

## मधुमतीर्मधुमतीभिः पृच्यन्ताम्।

इस मन्त्र में शिक्षा को रेवती और जगती नाम से व्यवहृत किया गया है जो प्रतिध्वनित करता है कि शिक्षा का उद्देश्य जगती अर्थात् व्यवहारोपयोगी एवं रेवती = आर्थिक उन्नति भी होना चाहिए। अतः जो ऐसा सोचते हैं कि प्राचीन शिक्षा प्रणाली अथवा प्राचीन शिक्षा केवल अध्यात्म से जोड़ने वाली है पण्डित या धार्मिक बनाती है जीवन के लिए व्यवहारोपयोगी अथवा धनादि से समृद्ध कर भौतिक सुख की अभिवृद्धि करने वाली नहीं है उनकी इस सोच को सर्वथा निर्मूल करती है।

आचार्य गुरु अथवा शिक्षक के लिये **बृहद् ग्रावासि वानस्पतयः** कहकर ग्रावा से उपमा दी है तथा उसका अर्थ गुरु किया है। महर्षि यास्क ने निरुक्त (9-1) में ग्रावा की व्युत्पत्ति करते हुए **ग्रावाणो हन्तेर्वा गृणातेर्वा गृह्णातेर्वा** ऐसा कहा है अर्थात् यहाँ ग्रावा-गुरु विद्यार्थी के दोषों का नाश करता है हनन करता है, योग्य बनाने के लिए अपने अन्तेवासित्व में ग्रहण करता है, तथा ज्ञानयुक्त बनाने के लिये शब्द करता है उपदेश करता है। अतः ग्रावा वह आचार्य है जो विद्यार्थी के दोषों को दूर करके ज्ञान से युक्त करके समाज के लिए उपयोगी बनाता है। इतना ही नहीं ज्ञान के साथ-साथ चरित्र की भी शिक्षा देता है उसके सभी इन्द्रियों को मन, बुद्धि, आत्मा को मन्त्रों के द्वारा पवित्र करता है शुद्ध करता है—

**ओम् वाचं ते शुन्धामि प्राणं ते शुन्धामि चक्षुस्ते शुन्धामि श्रोत्रं ते शुन्धामि नाभिं ते शुन्धामि मेढ्रं ते शुन्धामि पायुं ते शुन्धामि चरित्रांस्ते शुन्धामि॥** (यजु. 6/14)

अर्थात् मैं शिक्षा के साथ-साथ तेरे मन, वाणी एवं कर्म को पवित्र करता हूँ। अध्ययन प्रणाली में गद्य पद्य एवं दृश्य तीनों माध्यमों को अपनाने की प्रक्रिया पर बल दिया जाता था। तथा दृश्य- नाटक या अभिनय के लिये सभी प्रकार के ज्ञान विज्ञान को समझाने के लिये यज्ञ को माध्यम बनाया जाता था।

इन सबके होते हुए भी समुचित वातावरण एवं उपयुक्त पर्यावरण भी विद्यार्थी के ज्ञान संवर्धन में अव्यक्त सहायक हैं जो कि घर से दूर हॉस्टल नहीं अपितु गुरुकुल एवं आश्रम में रहकर ही सम्भव है क्योंकि 5-6 घण्टे का आचार्य का परिश्रम बच्चे घर जाकर व्यर्थ कर देते हैं। तथा आश्रम में 24 घण्टे गुरु के सान्निध्य में रहकर जो ज्ञान एवं कर्म की शिक्षा प्राप्त करते हैं उससे परिपक्व होते हैं तथा समुदाय में रहकर समाज एवं राष्ट्र के प्रति कुछ करने के लिये तत्पर होते हैं। प्राचीन गुरुकुल- गुरुकुल कांगड़ी (हरिद्वार) से निकले विद्वान् एवं स्वतन्त्रता सेनानी इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। अतः हमें वेदोक्त शिक्षा विषयक विचारों पर अवश्य ध्यान देना चाहिये तथा भावी राष्ट्र के कर्णधारों को तैयार करने की ओर ध्यान देते हुए वर्तमान शिक्षा प्रणाली में त्वरित गति से आमूल चूल परिवर्तन करना चाहिए।



— डा. प्रीति विमर्शिनी

# इतिवृत्तम्

— ब्र. दिव्या आर्या  
(आचार्य, द्वितीय वर्ष)

सम्पूर्ण विश्व में आर्ष शिक्षा हेतु विख्यात पाणिनि कन्या महाविद्यालय के वर्तमान शैक्षणिक सत्र 2016-17 में कुछ विशिष्ट कार्यशालायें सम्पन्न हुईं। प्रथम 15 मई से 15 जून तक शास्त्रीय सङ्गीत कार्यशाला आयोजित की गई। जिसमें भारत के विभिन्न प्रान्तों की लगभग 30 कन्याओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। जिसका प्रशिक्षण सुप्रसिद्ध गायिका, रागिनी सरना व सुप्रसिद्ध गायक देवाशीष डे के सुपुत्र श्री शुभङ्कर डे ने दिया।

द्वितीय 1 जून से 10 जून तक आर्य वीराङ्गना शिविर का आयोजन हुआ जिसमें लाठी, भाला, तलवार, छुरिका नियुद्धम् (जूडो-कराटे), रस्सी, निशानेबाजी इत्यादि का प्रशिक्षण अपने विद्यालय की कन्याओं के अतिरिक्त बाहर की 50 कन्याओं ने भी प्राप्त किया। जिसका कुशल प्रशिक्षण मथुरा से पधारे श्री प्रशान्त आर्य तथा उनकी धर्मपत्नी सुमेधा आर्या जी ने दिया। साथ ही साथ संस्कृत सम्भाषण तथा वैदिक कर्मकाण्ड का भी प्रशिक्षण इन कन्याओं ने प्राप्त किया।

तृतीय 6 नवम्बर 2017 को ज्योतिष के प्रकाण्ड विद्वान् आर्ष तिथि पत्रक (पञ्चाङ्ग) के निर्माता आचार्य दार्शनेय लोकेश जी के निर्देशन में 6 दिन की ज्योतिष कार्यशाला सम्पन्न हुई। जिसमें पञ्चाङ्ग निर्माण की जो गणितीय एवं भौगोलिक

पद्धति है जिसके मूलभूत घटक तिथि, वार, नक्षत्र, योग, लग्न, करण, संक्रान्ति, राहु-केतु, अयन, ऋतु, मास, सायन, निरयन, दिन, शर इत्यादि अनेक ज्योतिष के विशिष्ट शब्दों का ज्ञान प्राप्त हुआ साथ-साथ कुण्डली निर्माण की प्रक्रिया को भी हम सभी बहनों ने सीखा।

ज्योतिष कार्यशाला के साथ-साथ प्रतिवर्ष की भाँति 10 नवम्बर 2017 को त्रिदिवसीय पाणिनि महोत्सव का आयोजन प्रातः यज्ञ के माध्यम से राष्ट्र कल्याण एवं अभ्युदय की भावना से वेद मन्त्रों द्वारा ओम् ध्वजोत्तोलन के साथ हुआ।

इसके अन्तर्गत वैदिक शिक्षा एवं नारी विषय पर गोष्ठी आयोजित हुई। जिसमें अजमेर से पधारी आर्य वीराङ्गना दल की अध्यक्ष साध्वी उत्तमा यति, विश्व नारी अभ्युदय संगठन की अध्यक्ष श्रीमती रीता जयसवाल, प्रथम महिला सर्जन डॉ. सरोज चूडामणि, जम्मू विश्वविद्यालय से पधारी डॉ. प्रतिभा पुरन्धि, अमेठी से पधारे डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी इत्यादि अनेक विदुषियों एवं विद्वानों की गरिमामय उपस्थिति ने इस विषय को मूर्तरूप दिया। विषय स्थापना गुरुकुल की प्राचार्या नन्दिता शास्त्री जी ने किया। आपने बताया मध्य काल में लुप्त प्राय नारी शिक्षा को महर्षि दयानन्द ने ही पुनः स्थापित किया महर्षि दयानन्द न आते तो आज हमारा

समाज पङ्गु हो जाता क्योंकि व्यक्ति से लेकर समाज तक का निर्माण एक नारी ही करती है कर सकती है। जिसका ज्वलन्त उदाहरण महारानी मदालसा हैं जिन्होंने अपनी शिक्षा से तीन पुत्रों को वैरागी बना दिया तथा राज्य संचालन हेतु एक पुत्र को राजनीति में निपुण राजा बना दिया। एक युग था जब पुत्र की पहचान अपनी माता से हुआ करती थी जिसका उल्लेख बृहदारण्यक उपनिषद् में स्पष्ट रूप से है। वर्तमान समय में वेद न पढ़ने से ही नारियाँ भ्रम जाल में फँस रही हैं। इसलिये प्रत्येक नारी को वैदिक शिक्षा से युक्त अवश्य होना चाहिए।

अन्य विद्वानों ने भी इस विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा— **वैदिक शिक्षा कालजयी है** इसके अतिरिक्त शिक्षायें परिवर्तित होती रहती हैं। **संस्कृत भाषा विचारों को मजबूत बनाने की आधारशिला है** तथा आज की बेटी कल की नारी है इसलिये हमें अपने जीवन मूल्यों को पुनःस्थापित करना होगा। क्योंकि अतीत के धरातल पर जो चीजें चलती हैं वो वर्तमान में शीशे की तरह हमारे सामने दिखती हैं। वस्तुतः महर्षि दयानन्द के विचारों से ही देश का उद्धार हो सकता है क्योंकि उन्होंने जाति से ऊपर उठकर मानवता को ही सर्वोत्कृष्ट कर्म तथा धर्म माना है जिसका उपदेश संस्कृत में निहित है। रक्षा भी करता है और वह महर्षि दयानन्द ने नारी को वैदिक शिक्षा से युक्त करने की बात कही समाज में बदलाव एक नारी ही ला सकती है क्योंकि वो पढ़ती कम गढ़ती ज्यादा है भारतीय मनीषा में नारी स्वभावतः अधिक पवित्र है तथा वह दीपक अलङ्कार

के समान है जिससे दोनों घर प्रकाशित होते हैं। यदि हमारे देश में नारी शङ्कराचार्य होती तो हमारा देश कभी गुलाम नहीं होता। यह विद्यालय वैदिक शिक्षा का जीता, जागता ज्वलन्त उदाहरण है संगोष्ठी का संचालन कर रही विद्यालय की उपाचार्या डा. प्रीति विमर्शिनी जी ने कहा सभी गुणों से विभूषित नारी के लिये “**सर्वशक्तिरूपेण संस्थिता**” शब्द का प्रयोग होता है, वेदों में कहा— **यं कामये तं तं उग्रं कृणोमि** अर्थात् नारी जिसको जैसा बनाना चाहे उसका वैसा निर्माण कर सकती है शिक्षा का उद्देश्य भी यही होता है कि हम सही गलत में अन्तर कर सकें उसे पहचान सकें इत्यादि।

प्रथम दिवस सायंकाल दीनदयाल जन्मशती के उपलक्ष्य में दीनदयाल जी द्वारा रचित शंकराचार्य के जीवनवृत्त पर आधारित नाटक का मञ्चन हुआ जिसका निर्देशन **डा. आलोक पाण्डेय** जी ने किया। शास्त्रीय वैदुष्य के साथ-साथ नाट्य कला की प्रतिभा को देखकर अभ्यागत विशिष्ट अतिथियों ने इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की और कहा— पाणिनि कन्या महाविद्यालय का महत्त्व सम्पूर्ण भारत में व्याकरण महाभाष्य, निरुक्तादि, साङ्गोपाङ्ग वैदिक शिक्षा से है लेकिन इसके साथ-साथ यह नाट्य में भी अतुलनीय है। यहाँ संस्कृति एवं सभ्यता की सुरक्षा की जा रही है, यहाँ की बालिकायें सुबह-ए-बनारस में मन्त्रोच्चार कर हमारे देश एवं धर्म का सम्मान बढ़ा रही हैं। जिसका कारण है उन्हें यहाँ शिक्षित किया जा रहा है न कि मात्र साक्षर बनाया जा रहा है क्योंकि साक्षर का विपरीत राक्षस ही होता

है। मेरी कामना है **यहाँ की छात्रायें जहाँ भी जायें वहाँ एक पाणिनि कन्या महाविद्यालय खड़ा हो जाये।**

द्वितीय दिवस प्रातःकालीन यज्ञ के पश्चात् नवनिर्मित वेद पाठशाला का उद्घाटन वाराणसी की महिला सांसद **ज्योत्स्ना श्रीवास्तव जी** के करकमलों द्वारा हुआ आपने एक प्रकोष्ठ के निर्माण में सांसद निधि से सहयोग प्रदान किया। इसी प्रकार **रमेश चन्द्र श्रीवास्तव** (लखनऊ) तथा **श्री मूलचन्द जी मित्तल** (पूर्व प्रधान आर्य समाज मेरठ) आप लोगों ने भी एक-एक प्रकोष्ठ के निर्माण में अपना सात्विक सहयोग प्रदान किया। आज सायंकालीन कार्य क्रम में सर्वप्रथम 40 लघु ब्रह्मचारिणियों ने यजुर्वेद का सस्वर पाठ प्रस्तुत किया तदनन्तर वाद्य एवं संगीत की मनोहर प्रस्तुति हुई जो हमें साक्षात् गन्धर्व लोक के आनन्द से ओतप्रोत कर रही थी। तत्पश्चात् महर्षि दयानन्द द्वारा रचित लघु पुस्तिका **“स्वमन्तव्या-मन्तव्य प्रकाश”** को आधार बनाते हुए बहनों ने अनेक सामयिक विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत किये जो ग्राह्य एवं आत्मसात् करने योग्य रहे।

तृतीय दिवस का मुख्य केन्द्र बिन्दु शस्त्रास्त्र का शौर्यपूर्ण प्रदर्शन था, जिसकी **अध्यक्षा साध्वी उत्तमा यति जी थीं**” मुख्य अतिथि खण्ड जिला शिक्षाधिकारी **श्रीनारायण मिश्र**, विशिष्ट अतिथि सं.सं.वि.वि. के पूर्व साहित्यविभागाध्यक्ष **डॉ. राजीव रंजन ज्योतिष** के प्रकाण्ड विद्वान् **आचार्य दार्शनेय लोकेश जी** तथा प्रसिद्ध उद्योगपति **श्री अशोक गुप्ता जी** कर्णघण्टा वाराणसी थे। आज के कार्यक्रम

में कन्याओं द्वारा परेड पी.टी. स्वागतम्, लाठी, भाला, तलवार, लेजियम, डम्बल्स, योगासन, स्तूप, जूडो-कराटे इत्यादि का शौर्यपूर्ण प्रदर्शन हुआ जिसे देखकर उपस्थित दर्शकों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की।

**शास्त्रीय ज्ञान संवर्धन हेतु** ज्योतिष कार्यशाला एवं पाणिनि महोत्सव के साथ-साथ **विविध प्रतियोगितायें** भी सम्पन्न हुईं, यथा- पञ्चोपदेश पस्पशाह्निक आदि का स्मरण, अष्टाध्यायी, श्लोक तथा वेदमन्त्र की अन्त्याक्षरी, सामूहिक देशभक्ति गीत इत्यादि। सभी प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त ब्रह्मचारिणियों को पुरस्कार प्राप्त हुआ। यह पुरस्कार वाराणसी के प्रसिद्ध उद्योगपति **श्री अशोक गुप्ता जी** द्वारा दिया गया। जिसमें **भाषण प्रतियोगिता** में- अनन्या ने प्रथम, ज्योति ने द्वितीय, सुकृति ने तृतीय स्थान प्राप्त किया, **श्लोक अन्त्याक्षरी** में- प्राची प्रथम, ज्योति द्वितीय, सुकृति तृतीय स्थान पर रही, **सूत्र अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता** में- शिप्रा प्रथम, श्यामा द्वितीय, श्रद्धा तृतीय स्थान पर रही। वेदमन्त्र **अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता** में- रम्या प्रथम, पूजा द्वितीय, इन्द्राणी तृतीय स्थान, सामुदायिक **गायन प्रतियोगिता** में- मैना ग्रुप प्रथम, कक्षा- पद्मावती ग्रुप द्वितीय, ग्रुप पद्मिनी कक्षा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया, **शास्त्र स्मरण** में- सुधा प्रथम, दामिनी द्वितीय, सत्या ने तृतीय स्थान प्राप्त किया अन्त में गुरुकुल की प्राचार्या नन्दिता शास्त्री जी ने सभी आगन्तुक अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन किया।

आचार्या नन्दिता शास्त्री स्वयं बहुमुखी प्रतिभा की

धनी हैं उनके संरक्षण व निर्देशन में उपाचार्या प्रीति विमर्शिनी जी के सहयोग से विद्यालय की ये सभी विशिष्ट गतिविधियाँ हम ब्रह्मचारिणियों को बहुमुखी बनाने के उद्देश्य से यथासमय करती रहती हैं हम अपनी दोनों आचार्या जनों के कृतज्ञ व ऋणी हैं।

### विभिन्न बाह्य प्रतियोगिताओं द्वारा भासित विशिष्ट प्रतिभायें—

10 सितम्बर 2017 को शारदा भवन में विविध शास्त्रीय विषयों (व्याकरण, साहित्य, वेदमन्त्र, सूत्र-व्याख्या) पर आयोजित प्रतियोगिता में भाग लेकर विद्यालय की छात्राओं ने प्रायः प्रथम स्थान प्राप्त किया। 6 अगस्त 2017 श्रावणी उपाकर्म पर्व को भारत सरकार द्वारा घोषित संस्कृत दिवस एवं संस्कृत सप्ताह के रूप में मनाया गया। जिसमें “विविधध्येयवाक्यानि तेषामुपयोगिता” विषय पर संस्कृत सम्भाषण व निबन्ध लेखन की प्रतियोगिता आयोजित हुई।

15 अगस्त स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष्य में “देश, भक्ति गीत” की सामूहिक गान प्रतियोगिता हुई, जिसमें सभी ने अत्युत्कृष्ट प्रस्तुति दी। इसी प्रकार “राजकीय पुस्तकालय वाराणसी” द्वारा आयोजित सामूहिक श्लोक गान प्रतियोगिता में भी विद्यालय को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ।

5 अक्टूबर 2017 को उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थानम् लखनऊ द्वारा वाल्मीकि जयन्ती पर आयोजित संस्कृत सम्भाषण व संस्कृत गीत प्रतियोगिता में कन्याओं ने सर्वोत्कृष्ट प्रस्तुति देते हुए प्रथम व तृतीय स्थान प्राप्त किया।

वार्षिक परीक्षाओं में भी प्रायः सभी प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुई जिससे शत प्रतिशत परीक्षाफल प्राप्त हुआ। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा उत्तम अंकों से मध्यमा उत्तीर्ण कई छात्राओं ने लैपटॉप एवं साइकिल प्राप्त किया। इसी प्रकार बी.एच.यू. से एम.ए. कर रही विद्योत्तमा आर्या व दिव्यकिरण आदि पाणिनि की छात्राओं ने संस्कृत सम्भाषण व श्लोक प्रतियोगिता में गोल्ड मेडल प्राप्त किया। दीनदयाल सामान्य ज्ञान जिलास्तरीय प्रतियोगिता में सभी ने श्रेष्ठ प्रस्तुति दी तथा ज्योति आर्या (बिहार) का स्थान टॉप टेन के अन्तर्गत आया।

**अलङ्काराणां स्वरूप विमर्शः** विषय पर हुये शास्त्रार्थ में विद्यालय की मीनाक्षी आर्या (नेपाल) ने प्रथम स्थान तथा अंजली आर्या (ग्वालियर) ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। JICA संस्थान द्वारा आयोजित गंगा निर्मलीकरण पर हुई प्रतियोगिता में सत्या आर्या (बिहार) ने प्रथम, सुधा आर्या (वाराणसी) ने द्वितीय तथा प्राची आर्या (बागपत) ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

मेधा संकुल संस्कृति द्वारा आयोजित भाषण प्रतियोगिता में दिव्यकिरण ने प्रथम व निबन्ध प्रतियोगिता में प्रतीति आर्या ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान द्वारा आयोजित मुमुक्षु भवन में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में संस्कृत सम्भाषण में श्यामा प्रथम, दिव्यश्री द्वितीय आशु भाषण प्रतियोगिता में दामिनी ने द्वितीय तथा श्लोकान्त्यक्षरी एवं संगीत प्रतियोगिता में भी- क्रमशः गार्गी द्वितीय एवं दामिनी तृतीय तथा अपाला द्वितीय

एवं मैत्रेयी आर्या ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

प्राचीन काल से ही चली आ रही शास्त्रार्थ की परम्परा को पुनरुज्जीवित करने हेतु बनारस की पहचान सुबह-ए-बनारस के अन्तर्गत कलानिधि द्वारा शास्त्रार्थ की परम्परा का पुनरारम्भ वसन्त पञ्चमी से किया गया। प्रत्येक पूर्णिमा को यह शास्त्रार्थ होता है यह नारी शक्ति के लिये अत्यन्त गर्व की बात है कि अभी तक यह शास्त्रार्थ पाणिनि कन्या महाविद्यालय की ब्रह्मचारिणियों द्वारा सरस्वती की अवधारणा, धर्म, कर्म, अध्यात्म, वर्णाश्रम आदि विषयों पर हो चुका है।

इस प्रकार पाणिनि कन्या महाविद्यालय का विगत शैक्षणिक सत्र भी अनेक उपलब्धियों से पूर्ण रहा।

### वेदप्रचारार्थ विभिन्न यात्रायें—

(1) 7-14 अगस्त, 2017 यजुर्वेद पारायण यज्ञ एवं प्रवचन आर्य समाज काकड़वाड़ी मुम्बई (2) 28 अग. से 3 सित., 2017 ऋग्वेदीय यज्ञ एवं प्रवचन आर्य समाज कीर्तिनगर (3) 20-27 सितम्बर, 2017 स्त्री आर्यसमाज अशोक विहार, नई दिल्ली (4) 6-8 अक्टूबर, 2017 अन्तर्राष्ट्रिय आर्य महासम्मेलन म्यांमार (बर्मा) (5) 16-19 नवम्बर, 2017 आर्य समाज पठानकोट (6) 15-17 दिसम्बर, 2017 विश्व वेद सम्मेलन, इंदिरा गाँधी राष्ट्रिय कला केन्द्र, नई दिल्ली (7) 20-25 दिस, 2017 सामवेद पारायण यज्ञ आर्य समाज जामनगर (8) 23-25 दिसम्बर 2017 गुरुकुल आश्रम आमसेना स्वर्ण जयन्ती समारोह, (9) 21-31 दिसम्बर, 2017 ऋग्वेद पारायण यज्ञ शिंगलापरिवार पानीपत (10) 12-14 जनवरी 2018 आर्यसमाज गान्धीधाम

(गुजरात), (11) 19-21 जनवरी 2018 राष्ट्र वेद संगोष्ठी महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास जोधपुर, (12) 21-30 जनवरी, 2018 ऋग्वेद पारायण यज्ञ जम्मू (13) 21-30 फरवरी, 2018 वैदिक भक्ति साधना आश्रम, रोहतक (14) 13-22 मार्च, 2018 ऋग्वेद पारायण यज्ञ, प्रतापगढ़ कुण्डा (15) 25-27 मार्च, 2018 आर्य कुल दीपक महाशय धर्मपालजी एम. डी.एच. मसाले वाले के बृहत् जन्मोत्सव (16) 13-16 अप्रैल, 2018 वैदिक चरित्र निर्माण शिविर डी.ए.वी. कॉलेज पटना (17) 6-15 मई, 2018 वैदिक भक्ति साधना आश्रम तपोवन देहरादून, (18) 6, 7, 8 जुलाई, 2018 अन्तर्राष्ट्रिय गुरुकुल महासम्मेलन हरिद्वार आदि विभिन्न प्रचार यात्रायें वेद प्रचार कार्यक्रम प्रायः आचार्या नन्दिता शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में सम्पादित हुई। आचार्या जी के बाहर रहने पर पीछे से गुरुकुलीय सभी व्यवस्थायें पठन-पाठनादि कार्य उपाचार्या डा. प्रीति विमर्शिनी जी एवं संजीवनी पाण्डेय द्वारा भली-भाँति सम्पादित होती रहीं।

गुरुकुल सदैव आपके सहयोग के आकांक्षी हैं आप अपना सहयोग निम्न पते पर अथवा ऑन लाइन निम्न खाते में भेज सकते हैं।

**सहयोग हेतु:— पाणिनि कन्या महाविद्यालय**  
वे० H.D.F.C. बैंक वे० खाता संख्या  
02207620000015. IFSC Code : HDFC  
0000220 में आप अपना योगदान भेज सकते हैं।  
आपका सहयोग हमारे लिये बहुमूल्य है। **सम्पर्क**  
**सूत्र— 9235539740, 9235604340 □**

# कलानिधि द्वारा जनवरी 2018 से प्रति पूर्णिमा को अस्सी घाट पर आयोजित- पाणिनि कन्या महाविद्यालय की ऋषिकाओं द्वारा सम्पादित शास्त्रार्थ विवरण

(1) जनवरी मास, बसंत पंचमी, 22.01.18,

**विषय- सरस्वती**

**शास्त्रार्थी-** दिव्या, किरण, स्नेहा, मुदिता, श्रद्धा, अञ्जलि, ऐन्दवी, मैत्रेयी, दिव्याम्बिका।

**विवेचन-** शास्त्रार्थ की स्थापना करते हुए सरस्वती विषय की विवेचना की गई जिसमें सरस्वती देवी के अलंकारों का महत्त्व व उसके वास्तविक स्वरूप पर प्रकाश डाला गया।

(2) जनवरी मास, पौषी पूर्णिमा, 31.01.18,

**विषय- धर्म**

**शास्त्रार्थी-** गार्गी, दिव्या, किरण, स्नेहा, सुधा, सत्या, दामिनी, शिल्पा, अञ्जलि, प्राची।

**विवेचन-** समाज में फैले तथाकथित सम्प्रदायगत धर्मों की विवेचना के द्वारा शुद्ध सनातन वेद प्रोक्त धर्म की स्थापना एवं धर्म की आवश्यकता को प्रतिपादित किया गया।

(3) फरवरी मास, माघी पूर्णिमा, 01.02.18,

**विषय- कर्म**

**शास्त्रार्थी-** सुधा, सत्या, दामिनी, प्राची, शिल्पा, गार्गी, श्रीमती गीता झा नई दिल्ली।

**विवेचन-** वेद मनुस्मृति, उपनिषद्, गीता,

योगदर्शन के आधार पर कर्म का स्वरूप तथा अकर्मण्यता से देश और राष्ट्र कैसे प्रभावित होता है, इन बिन्दुओं पर चर्चा की गई।

(4) मार्च मास, फाल्गुनी पूर्णिमा, 30.03.18,

**विषय- गार्गी-याज्ञवल्क्य संवाद**

**शास्त्रार्थी-** मैत्रेयी, श्रद्धा, मुदिता, अनामिका, ज्योति, शिवांगी, स्मृति, अर्पिता।

**विवेचन-** जनक की सभा में गार्गी, याज्ञवल्क्य का जगत् प्रसिद्ध शास्त्रार्थ जिसमें अक्षर- ब्रह्म का निरूपण किया गया।

(5) अप्रैल मास, चैत्री पूर्णिमा, 30.04.18,

**विषय- सृष्टि रचना**

**शास्त्रार्थी-** मुदिता, पूजा, इन्द्राणी, ज्योति, शिवांगी, धृति।

**विवेचन-** सृष्टि रचना के अत्यन्त गूढ़ रहस्य को बृहदारण्यक उपनिषद् के आधार पर प्रस्तुत किया गया। जिसमें सर्वप्रथम पशु पक्षियों के साथ मानव की उत्पत्ति पर प्रकाश डाला गया।

(6) मई मास, वैशाखी पूर्णिमा 29.05.18,

**विषय- सात अत्रों में प्राण की सर्वोत्कृष्टता**

**शास्त्रार्थी-** विद्या, दिव्य किरण, मुदिता,

शिवांगी, ज्योति, धृति, अर्पिता, प्रशंसा।

**विवेचन—** बृहदारण्यक उपनिषद् के प्रथम अध्याय के पाँचवें ब्राह्मण के आधार पर पय, अन्न, वाणी, मन, हुत, प्रहुत, प्राण इन सात अन्नो में प्राण की सर्वोत्कृष्टता को स्थापित किया गया।

(7) जून मास, ज्येष्ठी पूर्णिमा, 28.06.18,

**विषय- ब्रह्मदर्शन**

**शास्त्रार्थी—** विद्या, दिव्य किरण, जया, श्यामा, महालक्ष्मी, सुधा, गार्गी, नेहा।

**विवेचन—** बृहदारण्यक उपनिषद् 2/1 के आधार पर काशिराज अजातशत्रु की सभा में गर्ग गोत्रोत्पन्न दृष्ट बालाकि द्वारा क्रमशः आदित्य, चन्द्र, विद्युत्, आकाश, वायु, अग्नि, जल आदि को ब्रह्म बताने पर सभा पुरुषों व राजा के द्वारा ब्रह्म के वास्तविक स्वरूप का दर्शन कराया गया।

(8) जुलाई मास, गुरु पूर्णिमा, 27.07.18,

**विषय- वर्णाश्रम**

**शास्त्रार्थी—** मुदिता, अनामिका, दिव्याम्बिका, गार्गी, प्राची, शिल्पा, दामिनी, सत्या।

**विवेचन—** मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है उसके लिए वर्ण और आश्रम क्यों महत्वपूर्ण है? इनका पालन मनुष्य क्यों करें तथा ये एक दूसरे से कैसे सम्बन्धित हैं इस विषय पर चर्चा की गई।

(9) अगस्त मास, श्रावणी पूर्णिमा, 26.07.18,

**विषय- धर्म के स्कन्ध**

**शास्त्रार्थी—** दिव्या, किरण, दामिनी, समीक्षा, अनामिका, दिव्याम्बिका।

**विवेचन—** धर्म को स्थापित करने के महत्वपूर्ण उपाय यज्ञ, अध्ययन, दान, तप, ब्रह्मचर्य आदि की महिमा बताई गई तथा इनके अभाव में हम धार्मिक नहीं बन सकते इत्यादि पर प्रकाश डाला गया।

**प्राची आर्या**



## महिलाओं के लिये सुखद अवसर

आप सभी को सूचित किया जाता है कि 30 वर्ष से ऊपर उम्र की महिलायें पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी में वेदकथा/वेद प्रवचन/यज्ञ/संस्कार/मन्त्रोच्चारण आदि सीखने के लिये प्रवेश पा सकती हैं। इस वर्ष 30 नवम्बर तक आपके लिये प्रवेश का द्वार खुला है।

आवास की सुविधा यहाँ उपलब्ध है। एतदर्थ भोजन आवास सहित शुल्क 6000/- रु. है। सम्पर्क सूत्र— 9235539740

# आर्षज्योति के पुनरुद्धारक ब्रह्मर्षि गुरु विरजानन्द जी दण्डी को शत-शत नमन

— डॉ. रामप्रकाश

दो प्रज्ञाचक्षु विभूतियाँ इस देश में अमर रहेंगी। एक कृष्णभक्त ब्रजवासी सूरदास जिसने सूरसागर की रचना करके भक्ति की लहर चलाई, दूसरा प्रज्ञाचक्षु दण्डी स्वामी विरजानन्द जिसका झुकाव आर्षग्रन्थों की ओर हुआ और जिसने ज्ञान की गंगा बहाकर समस्त धार्मिक जगत् एवं विद्वत् समाज को आन्दोलित किया। इतिहास में यह एक विस्मयोत्पादक घटना है कि एक व्यक्ति नेत्रहीन है, उसने जीवन में किसी पुस्तक के दर्शन नहीं किए, कोई पुस्तक स्वयं खोलकर पढ़ी नहीं, फिर भी वह संस्कृत-व्याकरण तथा अनेक क्लिष्ट विषयों का अद्वितीय पण्डित है। नेत्रहीनता न उसके शास्त्र ज्ञान प्राप्ति में बाधक हुई, न अध्यापन में। वे नेत्रहीन भले ही थे परन्तु ज्योतिष्मान् थे, **उस आलोक पुरुष को नमन!**

जिस दुबले-पतले व्यक्ति के भीतर इस्पात का कुछ था चट्टान जैसा, जिसने हर विपदा को सुअवसर में परिवर्तित किया, प्रतिकूल परिस्थितियाँ भी जिसका मार्ग अवरुद्ध न कर सकीं, **उस अदम्य उत्साह की मूर्ति को नमन!**

जिसका मस्तिष्क अद्भुत पुस्तकालय था, जिस की जिह्वा पर सरस्वती नृत्य करती थी, जिसके वैदुष्य के सामने कोई पण्डित ठहर न सका, जो श्रुतिधर था, जो प्रतिभाशाली कवि था, जो विद्यावारिधि

था, जो प्रबल तार्किक एवं प्रतिवादी अकाट्य शास्त्रार्थी था, जो शास्त्र-समर का अजेय योद्धा था, **उस शास्त्रतत्त्व-मर्मज्ञ प्रज्ञापुरुष को नमन!**

जिसने अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन कर ब्रह्म में विचरण किया, जिसने पुत्रैषणा, वित्तैषणा एवं लोकैषणा पर पूर्ण विजय प्राप्त की, जिसका सभी हिन्दू, मुस्लिम, साधु, सन्त, फकीर आदर करते थे, जो सुख-दुःख, हानि-लाभ से ऊपर था, जो स्थितप्रज्ञ था, उस सत्य के पुजारी, अपनी प्रकृति के राजेश, **धुन के धनी, विरक्त, योगी, निर्भीक, निःस्पृह संन्यासी को नमन!**

जिस आचार्य ने सहस्रों वर्षों के पश्चात् वेद को स्वतः प्रमाण घोषित किया, जिसने प्रत्येक शास्त्र को वेद की कसौटी पर परखना चाहा, जिसने व्याकरण का प्रयोग वेदादि के लिए स्वीकार किया, जो व्याकरण पढ़ाते समय वेदादि से उदाहरण देने के कारण शंकर, रामानुज, वल्लभ तथा मध्व आदि मध्य युगीन आचार्यों से कहीं आगे था, जिसने आगे बढ़ने के लिए वेद की ओर पीछे मुड़ने का निर्देश किया, जो नाविक चप्पू चलाते समय देखता पीछे था और नाव को बढ़ाता आगे था, जिस आचार्य प्रवर ने पहली बार सायण भाष्य को अनार्ष कहा, जिसने विदेशी शासन में भी मन्त्रोच्चारण

शुद्ध न करने वाले विदेशियों को वेदाध्ययन का अनधिकारी बताया, जिसने वेदार्थ समझने की सही कुंजी प्रदान की, **उस साहसी महान् मनीषी वेदभक्त को नमन!**

जब भट्टोजि दीक्षित के प्रयत्नस्वरूप सिद्धान्तकौमुदी के अतिरिक्त अन्य व्याकरण ग्रन्थों का अध्ययन-अध्यापन समाप्त हो गया था, जब अष्टाध्यायी का पठन-पाठन बन्द हो चुका था, जब अष्टाध्यायी के मर्म से शून्य पण्डित कहते थे कि न अष्टाध्यायी पढ़ने से व्याकरण आता है और न महाभाष्य की गणना व्याकरण ग्रन्थों में होती है, जब कहीं-कहीं आधी-अधूरी अष्टाध्यायी का पुनः प्रचलन आरम्भ हुआ, जिस परिव्राट् ने वह महान् कार्य किया जो बड़े-बड़े सम्राट् न करवा सके, जिसके पाण्डित्य के कारण संस्कृत व्याकरण का कालक्रम 'दण्डी पूर्व' और 'दण्डी बाद' के रूप में लिखा जा सकता है, अष्टाध्यायी का पुनरुद्धार करने वाले **उस व्याकरण-सूर्य को, शब्दशास्त्र के ऋषि को, साक्षात्-कृतधर्मा को नमन!**

जिसने ऋषिप्रणीत ग्रन्थों पर बिना किसी नूतन तत्त्व के व्यर्थ टीका लिखकर मूल ग्रन्थ का क्रम भंग करने वाले ब्रह्महत्यारे सामान्य मनुष्यों को यह अनर्थ बन्द करने की चेतावनी दी, जिसने भोगवादी संस्कृति के पुजारी लेखकों की पुस्तकों की भरमार में से तत्त्वदर्शी ऋषियों के आर्षग्रन्थों को पहचानने की कसौटी प्रदान की, जिसने अनार्ष चिन्तन के घनघोर काले बादलों में छिपे आर्ष ज्ञान के सूर्य के पुनः दर्शन करवाए, जिसके जीवन के अन्तिम दो दशकों

में जीवन वृत्त की परिधि का केन्द्र बिन्दु आर्षग्रन्थ रहे, भारतीय अस्मिता तथा पहचान को बनाए रखने की दिशा में क्रान्तिकारी पग उठाने वाले **उस अमर योद्धा को नमन!**

जब धार्मिक, सामाजिक एवं राजनीतिक रूप से पूर्णतया विघटित भारतवर्ष में अनेक छोटी-छोटी रियासतें थीं, जब उन पर अंग्रेजी शासन का शिकंजा दिन-प्रतिदिन कसता जा रहा था, जब अज्ञान, अशान्ति, दरिद्रता, भुखमरी, अकाल तथा अराजकता का पूर्ण साम्राज्य था, जब परस्पर घोर विरोधी मतमतान्तरों का जाल बिछा हुआ था, जब अनेक देवी-देवता थे जिनके भिन्न-भिन्न मन्दिर थे, जिनमें स्व-प्रकल्पित भिन्न-भिन्न शास्त्रों के आधार पर पूजा-पाठ की भिन्न-भिन्न पद्धतियाँ प्रचलित थीं, जब न चिन्तन समान था, न विचार, न आचार समान था, न व्यवहार, न आराध्य देव एक था, न पूजा-पाठ की विधि, न आचार्य एक था, न धर्मग्रन्थ, जब विभिन्न पुराणों की रचना की जा चुकी थी, जब विभिन्न आचार्यों की सम्पूर्ण शक्ति अपने-अपने सम्प्रदाय की श्रेष्ठता सिद्ध करने में लग रही थी, तब विदेशी शासन के विरुद्ध राजाओं एवं प्रजा में चेतना पैदा करने वाले, सम्प्रदायवाद के विरुद्ध सतत संघर्ष कर एकता का बीज वपन करने वाले, पुराणों, मतमतान्तरों एवं सम्प्रदायों के विरुद्ध ध्वनित **उस स्वर को नमन!**

जब चेतन जीवात्मा जड़ प्रकृति के सामने माथा टेककर अपना और परमात्मा दोनों का अपमान कर रही थी, जब एक निराकार परमात्मा की स्तुति

प्रार्थनोपासना के बदले नित्य नए स्वनिर्मित भगवानों की मूर्तियों का पूजन जोरों पर था, जब मूर्तिपूजा और अवतारवाद ने जगन्नियंता प्रभु को ही उसके स्थान से अपदस्थ कर दिया था, जब लगभग सभी आचार्यों एवं सम्प्रदायों के प्रवर्तकों तथा उनके अनुयायियों ने मूर्तिपूजा के साथ दुरभिसन्धि करने में ही भलाई मान ली थी, जो आचार्य स्वयं अवतारवाद के पोषक न थे उनके शिष्य उन्हें ही अवतार एवं साक्षात् भगवान् मानने लग गये थे, ऐसे समय में मूर्तिपूजक परिवार में जन्मे, उन्हीं संस्कारों में पले, मूर्तिपूजा के प्रसिद्धतम गढ़ों में शिक्षा-प्राप्त तथा उन्हीं के बीच में रहने वाले जिस प्रज्ञाचक्षु दण्डी स्वामी ने मूर्तिपूजा और अवतारवाद को वेद विरुद्ध घोषित कर इस चिन्तन को दृढ़ शास्त्रीय आधार प्रदान किया, जिस आचार्य ने स्वयं तो क्या जिसके शिष्य ने भी मूर्तिपूजा तथा अवतारवाद से समझौता न किया, जिसने मूर्तिपूजा के स्थान पर गायत्री, प्राणायाम तथा योगाभ्यास पर आधारित ईश्वरोपासना पर बल दिया, **उस सच्चे ईश्वरोपासक को नमन!**

जब भारतीय समाज सभी आर्योचित गुणों से वंचित हो चुका था, जब चाटुकारिता, दम्भ, भयग्रस्त जीवन तथा पेटपूजा के लिए सत्य का क्रय-विक्रय सामान्य बात बन गई थी, जब हीनवृत्ति के कारण ईश्वर-पुत्र कर्मभ्रष्ट ही नहीं, नाम भ्रष्ट भी हो गए थे, जब अंधविश्वास, रूढ़ियों एवं अवैदिक मान्यताओं में फँसे समाज का धर्म मृतक-श्राद्ध एवं कण्ठी, माला, तिलक, छाप आदि बाहरी प्रतीकों तक ही सीमित हो

गया था, तब उन कुरीतियों के विरुद्ध संघर्षरत **उस समाज सुधारक को, उस महामानव को, उस पथप्रदर्शक को नमन!**

जब बाल-विवाह एवं वृद्ध विवाह के कारण भारत में बाल-विधवाओं की बहुसंख्या थी, जब मृत-पति के साथ सती होने के अतिरिक्त इन विधवाओं के पास कोई विकल्प न था, जब बाल-विधवाओं के करुण क्रन्दन का भी पाषाण हृदयों पर प्रभाव नहीं पड़ रहा था, तब जिसने धार्मिक जगत् में साहसपूर्ण घोषणा की थी कि विधवा विवाह वेद-वर्जित नहीं है, उस पराई पीड़ा को अनुभव करने वाली **करुणामय मूर्ति को नमन!**

जिस आदर्श अध्यापक की भावना, तत्परता, विद्वत्ता तथा अध्यापन शैली की श्रेष्ठता को सभी स्वीकार करते थे, वैचारिक मतभेद रखने वाले भी जिसे गुरु धारण कर गौरवान्वित होते थे, सूर्य और चन्द्रमा रूपी दीपक लेकर भी आकाश जिस सदृश गुरु को पृथ्वीतल पर न खोज पाया, जिसने दयानन्द रूपी स्वर्ण को तपाकर कुन्दन बना दिया, जिसने दयानन्द को आर्षमेधा तथा वेदनिष्ठा प्रदान कर उसमें ऋषित्व का विकास सम्भव किया, जिसके चिन्तन के अमृतकणों को दयानन्द ने कालान्तर में गंगधारा का वेग प्रदान किया, जिसने प्रभु से यही वर चाहा कि मनुष्य जाति भले ही उसे भूल जाए पर उसकी कलाकृति (दयानन्द सरस्वती तथा आर्षग्रन्थों की पहचान) को सदैव स्मरण रखे, **उस गुरु को, सद्गुरु को, जगद्गुरु को नमन!**

समय आने पर जिस दयानन्द के समक्ष सभी

पण्डित, आचार्य, वैयाकरण, योगी, यति, पादरी, मौलवी, मठाधीश तथा आस्तिक, नास्तिक एवं संशयवादी चिन्तक निस्तेज और निष्प्रभ सिद्ध हुए उसकी प्रतिभा जिस प्रतिभा के सामने हतप्रभ हुई थी, उसके पाण्डित्य ने जिसके पाण्डित्य का लोहा माना था, उसकी विचारशक्ति ने जिसकी विचारशक्ति का अनुसरण किया था, कैसी अद्भुत होगी ऐसी प्रतिभा, पाण्डित्य व विचारशक्ति का स्वामी वह दण्डी साधु! **उस अद्भुत प्रतिभा को नमन!**

जैसे गुरु-शिष्य शृंखला में यूनान ने सुकरात, प्लेटो और अरस्तू पैदा किए, उसी प्रकार भारत में

विरजानन्द दण्डी, दयानन्द सरस्वती और गुरुदत्त विद्यार्थी हुए। तीनों का ध्येय एक था, लक्ष्य एक था। इस त्रिमूर्ति के प्रथम-पुरुष को, क्रान्ति के अप्रदूत को, **स्वप्नद्रष्टा दण्डी स्वामी को नमन!**

जिसके पुण्य प्रताप से उनकी उन्नीसवीं शताब्दी की यह चिन्तन परम्परा अगली शताब्दियों को सौंपने, कृष्ण जन्मभूमि से उदित होते दयानन्द रवि के दर्शन करने एवं यह अमर जीवन गाथा लिखने का सौभाग्य भाषा, इतिहास, व्याकरण, साहित्य एवं शास्त्र-ज्ञान शून्य मुझ जैसे व्यक्ति को प्राप्त हुआ, **उसकी पुण्य स्मृति को सादर नमन। शत-शत नमन। □**

## कन्या गुरुकुल देहरादून द्रोणस्थली के कुलपिता डा. वेद प्रकाश आर्य का निधन

कन्या गुरुकुल देहरादून द्रोणस्थली के कुलपिता **डा. वेदप्रकाश जी** आर्य का सितम्बर मास में निधन हो गया। डा. अन्नपूर्णा जी इस गुरुकुल की प्राचार्या हैं पूज्य पिता जी का ही यह सत्प्रयास था कि अन्नपूर्णा जी इस गुरुकुल की आचार्या के रूप में स्थापित हुईं। आपका गुरुकुलों के प्रति समर्पित वह स्नेहिल व्यक्तित्व था जिसके कारण प्रायः सभी गुरुकुल वासी आपको पिता जी कह कर पुकारते थे। आपके जीवन का ध्येय वाक्य था— **“गुरुकुल खोलो, संस्कृत बोलो।”**

कन्या गुरुकुलों के प्रति, बेटियों के प्रति आपका विशेष लगाव था। अपने गुरुकुल के समारोह में वे विशेष रूप से बार-बार स्मरण करके हमें बुलाते थे।

एक व्यक्ति जो गुरुकुल में नहीं पढ़ा, वह गुरुकुल की स्थापना से लेकर उसकी सभी आवश्यक सुविधाओं का पूर्ण प्रबन्ध करता था सभी को अपनी बेटियों के समान प्यार देता था। यह बहुत बड़ी बात है उन्होंने अपने जीवन को अपने सुनियोजित कर्म से सचमुच धन्य बना लिया था। वे सामान्य व्यक्ति नहीं थे उनका साहस और पुरुषार्थ गजब का था। उनके चेहरे और कार्यों को देख कर कोई अनुमान नहीं कर सकता था कि वे शारीरिक असुविधा को हर पल झेलते हैं। वे सबके लिये उत्साह और साहस की प्रतिमूर्ति थे। मैं तो कहती हूँ ऐसे समर्पित कुलपिता सब गुरुकुलों को मिलें। अपने पाणिनि परिवार की ओर से मैं उनके प्रति हृदय से अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करती हूँ। — सम्पा. □

# आधुनिक हिंदी का पहला ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश'

'दैनिक भास्कर' 14 सितम्बर 2014

आधुनिक हिन्दी के मानक गद्य की सबसे पहली पुस्तक उदयपुर में 138 साल पहले वर्ष 1882 में लिखी गई थी। यह पुस्तक है- 'सत्यार्थ प्रकाश'। इसे लिखा था- **स्वामी दयानन्द सरस्वती** ने। उदयपुर में इस पुस्तक के लेखन स्थल पर आज सत्यार्थ प्रकाश भवन बना हुआ है। दुनियाभर से आने वाले पर्यटक इसे देखते हैं वे इसे आर्य समाज के संस्थापक एवं धर्म सुधार आन्दोलन के प्रमुख व्यक्ति दयानन्द सरस्वती के ग्रन्थ रूप में देखते हैं। लेकिन बहुत कम लोगों को पता है कि हिन्दी साहित्य के इतिहासकारों ने अपने ग्रन्थों में सत्यार्थ प्रकाश को हिन्दी के उन प्रारम्भिक ग्रन्थों में माना है, जिनके गद्य को बाद में सभी ने परम्परा के रूप में

ग्रहण किया। सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन से पहले हिन्दी गद्य की भाषा ब्रज और अवधी से बहुत अधिक प्रभावित थी। **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** ने हिन्दी साहित्य का इतिहास में माना है कि 1868 से 1893 का कालखण्ड हिन्दी गद्य के विकास का समय था। 1856 में जन्मे मनीषी समर्थदान चारण ने स्वामी दयानन्द सरस्वती की प्रेरणा से 1886 में अजमेर में राजस्थान प्रेस यंत्रालय की स्थापना कर राजस्थान समाचार साप्ताहिक प्रारम्भ किया था। 1904 में यह पत्र दैनिक हो गया, जिसने राजस्थान में दैनिक समाचार पत्रों की आधार भूमि तैयार की। नागरी लिपि में छपने वाला यह दैनिक 12 पेज का था। चन्द्रगुप्त वार्ष्णेय ने भी राजस्थान समाचार को प्रदेश का पहला दैनिक पत्र माना था। □

## सत्यार्थ प्रकाश का हिन्दी में लिखा जाना एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण घटना

— मनमोहन कुमार...

सत्यार्थप्रकाश कोई सामान्य ग्रन्थ न होकर वैदिक धर्मियों का धर्मग्रन्थ है जिसका आधार वेद और वेद की निष्क्रान्त सत्य मान्यताएँ एवं सिद्धान्त हैं। हम सत्यार्थप्रकाश को धर्मग्रन्थ इसलिये कह रहे हैं कि सामान्य व्यक्ति वेदों का अध्ययन कर उससे वह लाभ नहीं उठा सकता जो सत्यार्थप्रकाश से प्राप्त होता है। सत्यार्थप्रकाश में वेदों के प्रायः सभी

सिद्धान्तों एवं मान्यताओं को सरल व सुबोध आर्य-हिन्दी भाषा में ऋषि दयानन्द जी ने प्रस्तुत किया है। यदि किसी जिज्ञासु को इस संसार के उत्पत्ति कर्ता ईश्वर का ज्ञान प्राप्त करना हो तो वह सत्यार्थप्रकाश के प्रथम व सप्तम समुल्लास को पढ़कर प्राप्त कर सकता है। जीवात्मा और सृष्टि की उत्पत्ति विषयक सिद्धान्त व जानकारी भी सत्यार्थप्रकाश के सातवें व

आठवें समुल्लास को पढ़कर हो जाती है। सत्यार्थप्रकाश की विशेषता यह भी प्रतीत होती है कि इसमें वेद सहित 6 दर्शनों एवं अन्य ऋषियों के वेदानुकूल सिद्धान्तों व प्रमाणों को प्रसंगानुसार प्रस्तुत किया गया है जिससे पूरा विषय कम समय में हृदयंगम हो जाता है और पढ़े गये विषय के बारे में किसी प्रकार की शंका व भ्रम नहीं रहता। ईश्वर व जीवात्मा का जितना शुद्ध व गम्भीर ज्ञान सत्यार्थ प्रकाश में उपलब्ध होता है, हमारा अनुमान है कि वैसा व उतना संसार के किसी मत व पन्थ के धर्म ग्रन्थ में उपलब्ध नहीं होता। सत्यार्थप्रकाश की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि विश्व के साहित्य में दुर्लभ आध्यात्मिक व सामाजिक ज्ञान एक ही ग्रन्थ में हिन्दी भाषा में उपलब्ध हो जाता है। आर्यभाषा हिन्दी का महत्व इस कारण से है कि यह आज करोड़ों लोगों के बोलचाल की भाषा है। आज सभी लोग इसी भाषा में सोचते व परस्पर बोलचाल का व्यवहार करते हैं। सत्यार्थप्रकाश से पूर्व सत्यार्थप्रकाश में वर्णित विषयों का ज्ञान किसी एक ग्रन्थ को पढ़कर प्राप्त नहीं होता था। यह वैदिक साहित्य के अनेक ग्रन्थों में बिखरा हुआ था जिसे ऋषि दयानन्द ने आधुनिक काल की आवश्यकता के अनुरूप संकलित कर प्रश्नोत्तर व वाद-विवाद शैली में उपलब्ध कराया है। इसके अतिरिक्त भी ऋषि दयानन्द ने बहुत सी ऐसी बातें सत्यार्थप्रकाश में प्रस्तुत की हैं जो उनकी अपनी खोज व विचार शक्ति से हमें उपलब्ध होती हैं। यदि वह यह ग्रन्थ न लिखते तो आज हम इस प्रामाणिक ज्ञान से वंचित होते और लोग स्वयं भ्रमित होकर हमें भी भ्रम में रखकर हमारा शोषण और दोहन करते और हमें वह आत्मिक

सुख व शान्ति न मिलती जो सत्य ज्ञान को प्राप्त कर होती है। यह भी जान लें कि सत्यार्थप्रकाश के उत्तरार्ध के चार समुल्लास आर्यावर्तीय मतों, चारवाक-बौद्ध-जैन मत सहित ईसाई व मुस्लिम मत की समीक्षा विषयक हैं जो जिज्ञासु को सत्य मत का निर्णय करने में सहायक एवं ज्ञानवर्धक हैं।

सृष्टि के आरम्भ से लेकर महाभारत काल व उसके सैकड़ों वर्षों तक विश्व वा आर्यावर्त में सर्वत्र वेदों का ही प्रचार-प्रसार था और वैदिक मान्यतायें एवं सिद्धान्तों का आचरण ही लोगों का धर्म होता था। इस लम्बी अवधि में विश्व की भाषा संस्कृत थी। किसी भी भाषा के उद्भव का इतिहास जानना हो तो यह उस भाषा की सबसे प्राचीन उपलब्ध पुस्तक के आधार पर जाना जा सकता है। विश्व की सबसे पुरानी पुस्तक वेद है जिसकी भाषा संस्कृत है। वेद सृष्टि के आरम्भ में तिब्बत में उत्पन्न हुए थे। उन दिनों तिब्बत में ही मानवीय सृष्टि थी। पृथिवी का शेष भाग उन दिनों मानव सृष्टि से रहित था। बाद में तिब्बत से चलकर आर्यों ने सारी सृष्टि को बसाया। इसका प्रमाण संसार की प्रायः सभी भाषाओं में संस्कृत से मिलते-जुलते शब्दों का पाया जाना है। वेद, सृष्टि व मनुष्य परम्परा 1,97,29,39,118 वर्ष पुरानी है। इससे यह ज्ञात होता है कि संस्कृत भाषा की परम्परा भी इतनी ही पुरानी है। संसार की जितनी भी भाषायें हैं, उन भाषाओं के प्राचीनतम ग्रन्थों को देखकर उन-उन भाषाओं का आरम्भ व इतिहास का अनुमान कर सकते हैं। हमारा अनुमान है कि किसी भाषा के प्राचीनतम ग्रन्थ से कुछ सौ वर्ष पूर्व ही उस भाषा का प्रचलन आरम्भ होता है। जो भाषा प्रचलन में आती है वह उससे पूर्व की

भाषा का किंचित् विकार व परिवर्तित रूप होता है। महाभारत काल के बाद संस्कृत का प्रयोग कम होने लगा था और उसके स्थान पर संस्कृत के शब्दों पर आधारित अनेक बोलियों व भाषाओं का जन्म हुआ। वर्तमान समय में जो भी भाषा व भाषायें हैं वह पहले बोलियाँ रही होंगी जिन्हें बाद में उन-उन भाषा के विद्वानों द्वारा उस भाषा का संशोधित स्वरूप दिया गया होगा। अपने समय में प्रचलित किसी अन्य भाषा जिसे प्रयोगकर्ताओं के लिये क्लिष्ट कह सकते हैं, उससे उत्पन्न नवीन भाषा पूर्व भाषा का विकार व संशोधित रूप होती है। कालान्तर में वह पूर्व प्रचलित मुख्य भाषा गौण हो जाती है और वह परिवर्तित बोली उन्नति करके भाषा बन जाती है। भारत की जितनी भी भाषायें हैं वह सभी संस्कृत से आविर्भूत व उत्पन्न हैं। सभी भाषाओं में संस्कृत शब्दों की प्रचुरता है। कुछ भारतीय भाषाओं में पहले संस्कृत के प्रचुर मात्रा में शब्द होते थे परन्तु उस भाषा के लोगों ने संस्कृत के प्रति अपने द्वेष आदि के कारण उन भाषाओं से संस्कृत के शब्दों को शनैः-शनैः हटाया है। मनुष्य का स्वभाव ही ऐसा है कि अल्पज्ञ होने के कारण यह अज्ञान व भ्रम से ग्रस्त हो जाता है।

ज्ञान को सामान्य व्यक्ति तक पहुँचाना विद्वानों का काम होता है। इसके लिये सामान्य व्यक्ति की भाषा को ध्यान में रखना आवश्यक है। यदि हमारे पास उन भाषाओं में उच्च कोटि का ज्ञान हो जिसे हम जानते नहीं हैं तो उससे हम कोई लाभ नहीं उठा सकते। विद्वान् हमें जो ज्ञान देते हैं वह क्षणिक व कुछ समय के लिए होता है। उसको स्थिर करने के लिये हमें पुस्तकों के माध्यम से पुनरावृत्ति करनी

होती है। महाभारत के बाद वेद ज्ञान के अप्रचलित होने व उसमें अज्ञान व अंधविश्वास आ जाने का एक कारण यह भी था कि संस्कृत के जानने वाले लोग कम होते गये। वेदों के अर्थ लौकिक संस्कृत में सम्भव नहीं हैं। इसका कारण है कि वेदों के शब्द रूढ़ न होकर योग रूढ़, यौगिक वा धातुज हैं। अतः वेदों के रूढ़ अर्थों से यदि संस्कृत का विद्वान् काम लेगा तो अर्थ का अनर्थ हो सकता है। ऐसा ही सायण व महीधर के साथ हुआ। वह वेद मन्त्रों के शब्दों के रूढ़ अर्थों को ग्रहण करने के कारण यथार्थ अभिप्राय को जान नहीं सके और मिथ्या अर्थ करके वेदों की महत्ता को समाप्त करने का काम किया। ऋषि दयानन्द अपने योग बल का उपयोग करते हुए वेदों के सरल व यथार्थ अर्थ करने में सफल हुए। आज वेदों का सत्यार्थ लोगों को उपलब्ध है जिससे लोगों के ईश्वर, जीव व प्रकृति से सम्बन्धित सभी भ्रम व शंकायें दूर हुई हैं। ऋषि दयानन्द ने वेदों की मान्यताओं और सिद्धान्तों को सत्यार्थप्रकाश व ऋग्वेदादि-भाष्यभूमिका में प्रस्तुत कर उसे जन-जन तक पहुँचाने का कार्य किया है। यह ऋषि दयानन्द का 'भूतो न भविष्यति' के समान कार्य है। आज कक्षा 5 तक हिन्दी पढ़ा हुआ व्यक्ति भी वेद पढ़कर उसके सत्यार्थ को जान सकता है। यह ऋषि दयानन्द की बहुत बड़ी देन है। यदि ऋषि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका सहित वेदों का भाष्य हिन्दी में न करते तो आज देश भर में वेदों के सहस्रों नहीं अपितु लाखों की संख्या में जो विद्वान् हैं, वह कदापि न होते और समाज में अज्ञान, अंधविश्वास, पाखण्ड और रूढ़िवाद की स्थिति की हम कल्पना भी नहीं कर सकते। यह

अत्यन्त वृद्धि को प्राप्त होती।

ऋषि दयानन्द ने सन् 1874 के उत्तरार्ध में सत्यार्थप्रकाश की रचना की थी। इसका दूसरा संशोधित संस्करण उन्होंने सन् 1883 में तैयार किया था। आजकल सत्यार्थप्रकाश का संशोधित संस्करण ही प्रचलित है। इस सत्यार्थप्रकाश की देश को आधुनिक रूप देने में बहुत बड़ी भूमिका है। सत्यार्थप्रकाश में ईश्वर, जीव व प्रकृति का सत्य स्वरूप विद्यमान है और वेदाध्ययन की प्रेरणा करने सहित ईश्वरोपासना और अग्निहोत्र यज्ञ करने की प्रेरणा भी विद्यमान है। अज्ञान व पाखण्डों का नाश करने में भी सत्यार्थप्रकाश की मुख्य भूमिका है। देश को आजाद करने की सबसे पहले स्पष्ट प्रेरणा भी सत्यार्थप्रकाश ने ही की थी। सत्यार्थप्रकाश ब्रह्मचर्यपूर्वक वैदिक गुरुकुलीय शिक्षा सहित आधुनिक शिक्षा का भी प्रेरक है। वह सबको शिक्षा का समान अधिकार देता है। शिक्षा सबके लिये अनिवार्य व निःशुल्क सुविधाओं वाली होनी चाहिये। कोई भी निर्णय बहुमत से नहीं अपितु विद्या व गुण-दोष के आधार पर लिये जाने चाहिये। देश में एक समान आचार संहिता होनी चाहिये। धर्म का पालन

निजी तौर पर किया जाना चाहिये। उसका देश व नागरिकों पर बुरा प्रभाव नहीं होना चाहिये। देश को जनसंख्या की नीति भी बनानी चाहिये जिससे भविष्य में भुखमरी व अव्यवस्था के साथ हिंसा आदि उत्पन्न न हो। मत-मतान्तरों के अनुयायियों की जनसंख्या भी समान दर से ही बढ़नी चाहिये, किसी वर्ग व समुदाय की कम व किसी की अधिक नहीं होनी चाहिये। देश में जनसंख्या वृद्धि से साधनों का अभाव होने सहित अनेक प्रश्न जुड़े हुए हैं। इसे स्थिर रखने के प्रयत्न किये जाने चाहियें। सत्यार्थप्रकाश की सत्य व अकाट्य बातों को सबको स्वीकार करना चाहिये। सत्यार्थप्रकाश को पढ़ने से मनुष्यों की बुद्धि का विकास होता है। सत्यार्थप्रकाश पढ़कर मनुष्य की विश्लेषण क्षमता में वृद्धि होती है। वह देश व समाज के हित-अहित के कारणों को जानने में समर्थ होता है। सत्यार्थप्रकाश मानव मात्र का सम्पूर्ण धर्मग्रन्थ है। हिन्दी में होने से हम इसे पूर्ण रूप से जानने में समर्थ होते हैं। सभी को सत्यार्थप्रकाश अपनाकर अपने दोनों लोकों का सुधार करना चाहिये। □

196, चुक्खूवाला-2, देहरादून

## सहयोग हेतु:-

यह संस्था आयकर मुक्त है। आप अपना सहयोग पाणिनि कन्या महाविद्यालय के H.D.F.C. बैंक के खाता संख्या 02207620000015, IFSC Code : HDFC 0000220 में भेज सकते हैं। आपका सहयोग हमारे लिये बहुमूल्य है। सम्पर्क सूत्र व पता— 9235539740, 9235604340  
पाणिनि कन्या महाविद्यालय, पो.- महमूरगंज, तुलसीपुर, वाराणसी- 221010

## स्मृतिशेष डॉ. भवानीलाल भारतीय



आर्यजगत् के उच्च कोटि के ख्यातिप्राप्त विद्वान्, लेखक, गवेषक, इतिहासविद्, मनीषी, चिन्तक प्रो. डॉ. भवानीलाल भारतीय का जन्म 1928 ई. में राजस्थान में नागौर जिले के परबतसर नामक ग्राम में श्री फकीरचन्द्र माथुर (वकील) एवं श्रीमती रतन कंवर के यहाँ हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा के पश्चात् आपने एम.ए. (हिन्दी, संस्कृत) पी-एच.डी. (राजस्थान विश्वविद्यालय) की उपाधियाँ प्राप्त कीं। 12 वर्ष की अवस्था में 'सत्यार्थ प्रकाश' के अध्ययन से जीवन क्रान्ति-पथ पर अग्रसर हुए। 1949 से 1980 पर्यन्त राजस्थान में जोधपुर, पाली, अजमेर के महाविद्यालयों में अध्यापन कार्य किया। सन् 1980 से 1991 तक पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ की दयानन्द शोधपीठ के अध्यक्ष एवं प्रोफेसर के रूप में शोधकार्य तथा शोधार्थियों को कार्य निर्देशन किया। इस अवधि में 28 शोधछात्रों को पी-एच.डी. की उपाधि दिलवायी।

आपने 1949 से लेखन कार्य आरम्भ किया। सन् 2001 की समाप्ति तक वेद, उपनिषद्, मनुस्मृति, गीता, दर्शन आदि विषयों तथा मुख्यतः महर्षि दयानन्द के जीवन कार्य एवं व्यक्तित्व की विवेचना से सम्बद्ध लगभग 140 ग्रन्थ रचे। पत्र-पत्रिकाओं में दयानन्द विषयक शताधिक शोधनिबन्धों के अतिरिक्त अन्य

विषयों पर हजारों लेख लिखे। आर्य लेखक परिषद् के आप संस्थापक अध्यक्ष भी रहे हैं।

आपके लिखे हुए प्रमुख ग्रन्थ इस प्रकार हैं—  
1. संस्कृत भाषा और साहित्य को ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज की देन (शोध-प्रबन्ध), 2. महर्षि दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द, 3. श्रीकृष्ण चरित, 4. ज्ञान दर्शन तथा भारतवर्षीय मतमतान्तर-समीक्षा, 5. नवजागरण के पुरोधा : दयानन्द सरस्वती, 6. दयानन्द साहित्य-सर्वस्व, 7. आर्य समाज के साहित्य का इतिहास, 8. स्वामी श्रद्धानन्द ग्रन्थावली (9 खण्डों में), 9. आर्य लेखक-कोश, 10. उपनिषदों की कथाएं, 11. हिन्दी काव्य को आर्य समाज की देन, 12. जर्मनी के संस्कृत-विद्वान् आदि। ऋषि दयानन्द के अनेकों जीवन-चरित्रों का आपने सम्पादन किया है। अंग्रेजी तथा गुजराती भाषा के अनेक ग्रन्थों का हिन्दी में अनुवाद किया है।

ऐसे महामना विद्वन्मनीषी, अजस्र लेखनी के धनी प्रो. डॉ. भवानीलाल भारतीय का इसी 11 सितम्बर 2018 को देहावसान हो गया। आप आर्य जगत् के एक चमकते सितारे थे।

आपका व्यक्तित्व, आपका जीवन, बहुत ही सादा, सरल व अनुशासित था। अपने महाविद्यालय की संस्थापिका आचार्या डा. प्रज्ञा देवी जी आपका बहुत सम्मान करती थीं। पाणिनि परिवार की ओर से हम आपको सादर सनम्र श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं।

— सम्पा.

## अटल जी और आर्यसमाज

— श्री धर्मपाल आर्य,  
आर्य सन्देश, नई दिल्ली

..... राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से तो मेरा प्रथम संपर्क 1939 में हुआ और वह भी आर्य समाज की युवा शाखा, आर्य कुमार सभा के माध्यम से। दरअसल उन दिनों ग्वालियर रियासत थी, जो किसी भी प्रांत का हिस्सा नहीं थी। एक कट्टर सनातनी परिवार से होने के बाद भी अटल जी आर्य कुमार सभा के साप्ताहिक सत्संग में सम्मिलित हुआ करते थे, जो कि प्रति रविवार को प्रातःकाल हुआ करता था। एक दिन आर्य कुमार सभा के एक वरिष्ठ कार्यकर्ता और महान् विचारक व कुशल संगठक श्री भूदेव शास्त्री ने अटल जी से पूछा, आप शाम को क्या करते हैं?.....

आर्य समाज के आंगन में पले बढ़े किसी महानुभाव के प्राण जब महायात्रा पर निकलते हैं तब कवि की कुछ पंक्तियाँ अक्सर जेहन में ताजा हो उठती हैं कि—

कलम आज उनकी जय बोल,  
जो जला अस्थियाँ बारी-बारी,  
छिटकाई जिसने चिंगारी।

जो चढ़ गए पुण्य वेदी पर,  
लिए बिना गरदन का मोल।

कलम आज उनकी जय बोल,  
जो अगणित लघु दीप हमारे,  
तूफानों में एक किनारे।

जल-जलकर बुझ गए किसी दिन,  
माँगा नहीं स्नेह मुँह खोल।

कलम आज उनकी जय बोल।

बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी, देश के पूर्व प्रधानमंत्री, भारत रत्न कवि और राजनेता अटल बिहारी वाजपेयी जिन्होंने अपने सार्वजनिक राजनीतिक जीवन में कई बड़ी चुनौतियों का सामना किया और उन पर विजय हासिल की। भारतीय राजनीति के मंच पर विशालकाय व्यक्तित्व के रूप में दशकों तक छाये रहे। देश के 72वें स्वतंत्रता दिवस के अगले दिन देश की इस आजादी के सिपाही के प्राण अपने 93 वर्ष पूरे करने के पश्चात् महायात्रा पर निकल गये। ये एक अपूरणीय क्षति है जिसे शतकों तक पूर्ण करना कठिन होगा।

25 दिसम्बर 1924 को ब्राह्ममुहूर्त में माता कृष्णा वाजपेयी की कोख से ग्वालियर में अटल जी

का जन्म हुआ था। एक कवि के घर जन्म लेने वाले इस नन्हें बच्चे के जीवन को कितने लोग भली-भाँति जानते हैं कि इस दीपक को क्रान्ति की मशाल किसने बनाया? माना कि डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी और पण्डित दीनदयाल उपाध्याय के निर्देशन में अटल जी ने राजनीति का पाठ पढ़ा। पाञ्चजन्य, राष्ट्रधर्म, दैनिक स्वदेश और वीर अर्जुन जैसे पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादन का कार्य भी कुशलता पूर्वक करते रहे लेकिन अन्तस् में वह पीड़ा कहाँ से आई जो उन्हें इस देश और समाज के लिए मर-मिटने को मजबूर कर उठी?

अटल जी जब अपने बपचन में थे तब इनके पिताजी स्व. कृष्ण बिहारी उँगली पकड़कर इन्हें आर्य समाज के वार्षिकोत्सव में ले जाते थे। धीरे-धीरे आर्य विद्वानों के उपदेश अटल जी को प्रभावित करने लगे। भजनों और उपदेशों के साथ स्वतंत्रता संग्राम की बातें भी उन्हें सुनने को मिलने लगीं। तत्कालीन आर्य समाज उस समय देशवासियों की विचारधारा नहीं बल्कि समूचे राष्ट्र की सत्ता बदलने के लिए आमादा था बस यही वह विचार था जो एक सामान्य से बच्चे अटल को पुरुष से महापुरुष बनने तक खींच लाये। प्रारम्भिक शिक्षा के उपरान्त अटल जी दयानन्द एंग्लो-वैदिक कॉलेज, कानपुर गये जहाँ वाजपेयी को उच्च शिक्षा मिली राजनीति विज्ञान में परास्नातक की डिग्री ली। जब वह छात्र थे तब आर्य समाज देश की तंत्रिका का केन्द्र था।

आर्य समाज स्वामी दयानन्द जी द्वारा स्थापित विचारों को जब अटल जी ने आत्मसात् किया तो

हिन्दू राष्ट्रवाद की प्रतिबद्धता की भावना उनके मन में जगी और जल्द ही ग्वालियर में आर्य समाज की एक युवा शाखा आर्य कुमार सभा के महासचिव नियुक्त हो गये। इसलिए वाजपेयी जी की असली पहचान का आंकलन करने के लिए आर्य समाज में उनके वैचारिक पालन-पोषण को भी ध्यान में रखना चाहिए इस बात को वाजपेयी जी स्वयं स्वीकार करते हुए कहते थे कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से तो मेरा प्रथम सम्पर्क 1939 में हुआ और वह भी आर्य समाज की युवा शाखा, आर्य कुमार सभा के माध्यम से। दरअसल उन दिनों ग्वालियर रियासत थी, जो किसी भी प्रांत का हिस्सा नहीं थी। एक कट्टर सनातनी परिवार से होने के बाद भी अटल जी आर्य कुमार सभा के साप्ताहिक सत्संग में सम्मिलित हुआ करते थे, जो कि प्रति रविवार को प्रातःकाल हुआ करता था। एक दिन आर्य कुमार सभा के एक वरिष्ठ कार्यकर्ता और महान् विचारक व कुशल संगठक श्री भूदेव शास्त्री ने अटल जी से पूछा, आप शाम को क्या करते हैं?

अटल जी ने कहा, कुछ नहीं इस पर उन्होंने उन्हें संघ की शाखा में जाने का आग्रह किया और इस प्रकार ग्वालियर में उनका शाखा जाने का क्रम प्रारम्भ हुआ। यही उनका आर.एस.एस. के साथ पहला परिचय था। किन्तु संघ के आंगन में लगा यह वटवृक्ष बहुत पहले ही पौधे के रूप में आर्य समाज की क्यारी में ही देशभक्ति के गीतों और विचारों से सींचा गया था। वाजपेयी जी हिन्दू जीवन में कुप्रथाओं और रूढ़िवादी विचारों को

तोड़ने के लिए आर्य समाज के बहुत ऋणी रहे। अटल जी का मानना था कि देश की बंटी हुई राजनीति को जोड़ने की आवश्यकता है। यह केवल सत्ता के लिए ही नहीं, बल्कि विघटनकारी शक्तियों से लोहा लेकर राष्ट्रीय हितों की रक्षा करने के लिए भी जरूरी है।

आर्य समाज के पालने में, पले बढ़े अटल जी जीवन के उच्च आदर्शों को स्थापित करते हुए आगे बढ़ते चले गये, देश के शीर्ष पद तक जा पहुँचे अटल जी से जब एक बार आर्य समाज के बारे में पूछा गया तब उन्होंने कहा था कि अगर आर्यसमाज न होता तो भारत की क्या दशा हुई होती इसकी कल्पना करना भी भयावह है। आर्यसमाज का जिस

समय काम शुरू हुआ था कांग्रेस का कहीं पता ही नहीं था। स्वराज्य का प्रथम उद्घोष महर्षि दयानन्द ने ही किया था यह आर्यसमाज ही था जिसने भारतीय समाज की पटरी से उतरी गाड़ी को फिर से पटरी पर लाने का कार्य किया था। अगर आर्यसमाज न होता तो भारत-भारत न होता। अटल जी के विचारों को इस उत्तुंग शिखर पर ले जाने में आर्य समाज का जो योगदान रहा वह कभी भुलाया नहीं जा सकता इस कारण लेख के अंत में मैं दावे के साथ कह सकता हूँ अगर आर्य समाज न होता तो अटल बिहारी वाजपेयी जी भी अटल बिहारी वाजपेयी जी न होते।

अटल जी तुम्हें शत-शत नमन।



## प्रो. डॉ. सुभाषजी वेदालंकार का निधन

संस्कृत साहित्य के विद्वान् एवं प्रसिद्ध कवि, अनेकों ग्रन्थों के लेखक, गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक, राजस्थान विश्वविद्यालय के पूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष **डा. सुभाषजी वेदालंकार** का दि. 6 जुलाई 2018 को दुखद निधन हो गया।

श्री वेदालंकारजी आधुनिक परम्परा के संस्कृत कवि माने जाते थे। उन्होंने अनेक विषयों पर नये ढंग से कविताएँ रचीं। संस्कृत को परिवार की मातृभाषा बनाने वाले तथा संस्कृत के साथ जीने वाले वे एक श्रेष्ठतम कवि थे। ऐसे आर्य जगत् के एक महान्, विद्वान् कवि को खोकर संस्कृत काव्यसंसार आज शोकसंतप्त हैं।

आप स्वभाव से अत्यन्त सरल सहृदय व्यक्ति थे। पाणिनि कन्या महाविद्यालय और वहाँ की आचार्या **डा. प्रज्ञा-मेधा देवी** जी से आपकी विदुषी धर्मपत्नी **श्रीमती जय देवी बत्रा** के बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध रहे हैं। आपके तीनों पुत्र विश्रुत, सुश्रुत, विराट् ने आपके दिये संस्कारों को बहुत आगे बढ़ाया है। सम्पूर्ण पाणिनि परिवार की ओर से हम उन्हें सादर श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं। और सम्मान्या बहिन जी व परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करते हैं। — सम्पा.



# हमारा ज्योतिष और धर्मशास्त्र

गतांक से आगे —

— आचार्य हरिहर पाण्डेय

## आर्यभट्ट के युग

आचार्य आर्यभट्ट का ग्रन्थ हमारा ग्रहगणित का प्रथम ग्रंथ है। उसके अनेक महत्वपूर्ण विषयों में एक यह है कि यहाँ चारों युगों के मान सम्मान हैं। इससे अनुमान होता है कि प्राचीन काल में युगों के वर्ष और गुण समान थे। कलियुग न छोटा था न पापमय। सचमुच कई लाख वर्षों तक संसार का लगातार पुण्यमय या पापमय रहना असंभव है। कृतयुग में ही हिरण्यक, हिरण्यकशिपु, जालन्धर, पथु, कैटभ, मुर, पुर, अन्धक, चण्ड, मुण्ड, महिषासुर, रक्तबीज आदि दैत्य और उनके अगणित पापी मित्र धर्म का नाश कर रहे थे। कलह को कलि कहते हैं अतः लोग कलियुग को कलहमय मानते हैं किन्तु वेद का दाशराज्ञ युद्ध भी कलह है और यज्ञ के पहले दिग्विजय करना भी कलह है। त्रेता में रावण, खर, दूषण आदि सदृश महापापी थे और रघु, दशरथ एवं राम को भी कलह करना पड़ा था। कंस, शिशुपाल और जरासंध सदृश कलहप्रिय लोग द्वापर में थे और कौरवों-पाण्डवों तथा कंस-कृष्ण का कलह द्वापर में ही हुआ था। वेदों में अपनी रक्षा और शत्रुनाश के लिए जो सहस्रों प्रार्थनाएँ लिखी हैं वे सिद्ध कर देती हैं कि प्राचीनतम युग शान्तिपूर्ण और कलह विहीन नहीं था। कलियुग में जैनमुनि महावीर अन्य तीर्थंकर, भगवान् बुद्ध उनके देवस्वरूप अनेक शिष्य और अनुयायी, महाराज अशोक, विक्रमादित्य,

शंकराचार्य, रामानुज, बल्लभ, नानक, अर्जुनदेव, गुरुगोविन्द, बन्दा बैरागी, कबीर, दादू, राधास्वामी, रैदास, रमण, लाहिडी, रामकृष्ण, विवेकानन्द, अरविन्द, राजा राममोहन राय, दयानन्द, राणा प्रताप, शिवाजी, तिलक, गोखले, रान डे, सुभाष, सावरकर, लाजपत, गान्धी, मालवीय, चन्द्रशेखर आदि इतने देव और ऋषि पैदा हुए हैं कि उनके नाम लिखने के लिए एक मोटा ग्रन्थ चाहिए। अतः कोई युग शुभ-अशुभ नहीं होता।

## कलि की आकृति और कृति

आजकल पंचांगों के प्रथम पृष्ठ पर लिखा रहता है कि कलि का मुख पिशाचवत् भीषण है। वह लिंग और जीभ का दास है। अतः हाथों से उन दोनों को पकड़कर नाचता रहता है। कलि में देव राक्षस हो जाते हैं, तपस्वी कपटी हो जाते हैं, जनता मिथ्यावादी हो जाती है। मेघ कम बरसते हैं, नीच प्रसन्न रहते हैं, नृप दुष्ट हो जाते हैं, भले लोग भाग जाते हैं, गीता नष्ट हो जाती है, वेद लुप्त हो जाते हैं, स्मृति पुराण अदृश्य हो जाते हैं और रैदास आदि नीच जातियाँ धर्मोपदेश करने लगती हैं। शिव, शिव, शिव कितना भीषण है कलियुग!! इसके बहुत श्लोक हैं।

पिशाचवदनः क्रूरः कलिस्तु कलहप्रियः।  
धृत्वा वामकरे शिशनं दक्षे जिह्वां स नृत्यति॥  
न देवे देवत्वं कपटपटवस्तापसजना जनो,  
मिथ्यावादी विरलतरवृष्टिर्जलधरः।

प्रसन्ना नीचा अप्यवनिपतयो दुष्टमतयो जनाः,  
 शिष्टा नष्टा अहह कलिकालो विलसति॥  
 गता गीता नाशं निखिलनिगमो दूरमगमत्,  
 विलीनाः स्मृत्यर्थाः क्वचिदपि पुराणं व्यपगतम्॥  
 इदानीं रैदासप्रभृतिवचनान् मोक्षपदवीं।  
 न जाने को हेतुः शिव शिव कलेरस्य महिमा॥

इन श्लोकों में लेखक की जो अभिलाषा है उसके अनुसार कोई भी युग शुभ और कृतयुग तब समझा जायेगा जब स्मृतियों और पुराणों का एकछत्र राज्य स्थापित हो जाय, वेद का मंत्र सुनने पर रैदास के कान में पिघला सीसा डाल दिया जाय, उसका हृदय विदीर्ण कर दिया जाय, विधवाएँ लाठी से मार-मार कर पति की चिता पर सती बना दी जायँ, शूद्र मन्दिरों में न जाने पावें, ब्राह्मण सर्वदुर्गुणसम्पन्न होने पर भी पूजे जायँ और पुराणों की सारी असम्भव बातों को सम्भव एवं रहस्यमय मान लिया जाय।

श्रीमद्भागवत (1/16) का कथन है कि कृष्ण की उपस्थिति में कलियुग को यहाँ आने का साहस नहीं था। उनके दिवंगत हो जाने के बाद वह झट आ गया। तब बैल रूपधारी धर्म के तीन पैर टूट गये। वह लंगड़ाते और कराहते हुए एक पैर से चलने लगा। पृथ्वी पर सर्वत्र पापियों का राज हो गया, यज्ञ बन्द हो गये, मेघों ने बरसना बन्द कर दिया, नारियाँ अरक्षित हो गयीं, ज्ञान, वैराग्य, सत्य, शौच, त्याग आदि लुप्त हो गये और पृथ्वी गाय का रूप धारण कर रोने लगी आदि आदि किन्तु ये सब कल्पनाएँ हैं। कृष्ण के समय में भी कलि था, कलह था, पाप का अभ्युत्थान था, धर्म की ग्लानि थी,

साधु व्रस्त थे, जरासन्ध ने शिव को बलि देने के लिए बहुत से क्षत्रिय पाल रखे थे और कंस के अत्याचार से जनता व्रस्त थी। अतः भगवान् ने अवतार लिया। द्वापर में ही दुर्योधन और दुःशासन थे। द्वापर में ही युधिष्ठिर ने पत्नी और सारे राज्य को जूए में दाँव पर रखा था और जुआ खेलना धर्म समझा जाता था। तो क्या कृत, त्रेता और द्वापर में जुआ, मदिरा, हिंसा और सोना आदि में धर्म का वास था? सत्य यह है कि काल निराकार पदार्थ है। अतः कलि, भद्रा, संक्रान्ति आदि का तथा पृथ्वी धर्म, अधर्म आदि का साकार होना असंभव है। नारी में कलि का वास होता तो उससे उत्पन्न नर कभी सतयुगी न हो पाते। भागवत (12/3) में लिखा है कि कलियुग में सब मनुष्य निर्दयी, द्रोही, भाग्यहीन, दुराचारी, मिथ्याभाषी, आलसी, हिसंक, बहुभक्षी, कायर, दरिद्र, शोकाकुल और शूद्रवत् होते हैं। समाज चोरों से व्रस्त हो जाता है, स्त्रियाँ व्यभिचारिणी हो जाती हैं, वेद पाखण्ड से दूषित हो जाते हैं, राजा प्रजा को चूसने लगते हैं, ब्राह्मण उदरपरायण और कामी हो जाते हैं, संन्यासी धनी और तपस्वी ग्रामवासी हो जाते हैं, गायें दूध नहीं देतीं और शूद्र धर्मोपदेशक हो जाते हैं। देवी भागवत (6/11) में लिखा है कि पहले के राक्षस कलियुग में ब्राह्मण हो जाते हैं और वे पाखण्डी मिथ्याभाषी आदि होते हैं। अन्य तीन वर्णों की भी यही स्थिति रहती है। गोस्वामी तुलसीदास का भी यही कथन है और शूद्रों पर विशेष कटाक्ष है।

पूर्व ये राक्षसा राजन् ते कलौ ब्राह्मणाः स्मृताः।  
 असत्यवादिनः क्रूरा भवन्ति जनवंचकाः॥

**तथैव क्षत्रिया वैश्याः शूद्राद्या धर्मवञ्चिताः॥**

परन्तु ये सब कल्पनाएँ हैं। इन्हें सत्य मानने पर तो कलि के सब महान् पुरुषों को पापी मानना होगा, जो कि प्रत्यक्ष के विरुद्ध है। कृतयुग के विषय में भागवत और ब्रह्मवैवर्तपुराण (उ. १०) का कथन है कि उस समय सब मनुष्य सदाचारी, तपस्वी और आत्माराम रहते हैं। पृथ्वी अन्न से पूर्ण रहती है, मनुष्य लाख वर्ष जीते हैं, सबके घर रत्नजटित हो जाते हैं, कोई भी भिक्षुक दुःखी रोगी और वृद्ध नहीं होता, चोरी नहीं करता, परस्त्री गमन नहीं करता, देवों और द्विजों की निन्दा नहीं करता, ब्राह्मणों से कर नहीं लिया जाता, वे पूज्य और स्वच्छन्दगामी होते हैं तथा वृक्ष फलों से लदे रहते हैं।

**न भयं दस्युचौराणां न चासन् परदारिकाः।**

**न कृते दुःखितो मर्त्या सर्वेषां रत्नमन्दिरम्॥**

**न भिक्षुका न रोगार्ता नो जरार्ता न कुत्सिताः।**

**करशून्या द्विजास्सर्वे पूज्याः स्वच्छन्दगामिनः॥**

**लक्षवर्षायुषः केचित् खलहीनं जगत्त्रयम्॥**

किन्तु यह कथन मिथ्या है। ईश्वर को कृतयुग में चार बार, त्रेता में तीन बार, द्वापर में दो बार और कलि में केवल एक बार अवतार लेना पड़ता है। यह बात पुराणों में लिखी है। कृतयुग में हिरण्याक्ष पृथ्वी को ले भागा था, राक्षस मनुष्यों का रक्त पीते थे, मुनियों की हड्डी से पर्वत बन जाते थे, प्रह्लाद आग में डाले गये थे आदि आदि बहुत कुछ लिखा है।

वर्तमान ज्योतिष के अनुसार अशुभ नक्षत्रादि काल युग शुभ कर्मों में वर्जित हैं और चोरी, डाका, व्यभिचार, हत्या, विष-दान आदि पाप कर्मों में

उपयुक्त हैं मुहूर्तचिन्तामणि में रामाचार्य ने और उसकी पीयूषधारा टीका में वसिष्ठ ने कहा है कि अशुभ कालों में घात करने, आग लगाने, विष देने, फूट डालने आदि कर्मों में सफलता मिलती है। इस सिद्धान्त के अनुसार कलियुग में विवाह, गृहारम्भ, विद्याभ्यास आदि शुभ कर्म नहीं करना चाहिए और पाप कर्म करना चाहिए। धर्मशास्त्र ने भी कलि में कुछ कर्मों का निषेध किया है। उनमें से कुछ ये हैं—

परपुरुष से सन्तानोत्पादन (नियोग), श्राद्ध में माँस मदिरा का प्रयोग, संन्यास, देवर से सन्तानोत्पादन, विधवा विवाह, अक्षतयोनि विवाहिता का पुनर्विवाह, निम्न जाति की कन्या से विवाह, स्त्रीस्वातन्त्र्य, बलात्कार से अपवित्र स्त्रियों की शुद्धि, अतिथि सत्कार में बछियावध, पशुयाग, अश्वमेध, नरमेध, गोसव यज्ञ में गोवध, सौत्रामणि यज्ञ में सुरापान, शूलगव यज्ञ में बैलवध, ब्राह्मण को मृत्युदण्ड, लम्बा ब्रह्मचर्य, आत्महत्या, दूरस्थ तीर्थों की यात्रा, मुख से आग फूँकना, शूद्र से भोजन बनवाना आदि।

परन्तु सत्य यह है कि पाप कर्म प्रत्येक युग में पाप ही होता है। कृतयुग और त्रेता में यज्ञों में पशुओं की, साँस बन्द कर गला घोट कर हत्या की जाती थी। हत्यारा शामिल कहा जाता था और वह ब्राह्मण तथा अब्राह्मण दोनों होता था। तो क्या उस समय यह कर्म शुभ था? क्या बछियावध, बैलवध, माँस-मदिरा सेवन, नरमेध और आत्महत्या आदि कर्म किसी युग में वैध हो सकते हैं? बलात्कार से अपवित्र नारियों की शुद्धि और विधवा विवाहादि कर्म कृतयुग में उचित थे तो आज अवैध क्यों? (क्रमशः)



# हम भारत से क्या सीखें?

## द्वितीय भाषण

हिन्दुओं का चरित्र—

— प्रो० मैक्समूलर

( पूर्व अंक का शेष )

यद्यपि अभी उपरोक्त सूची काफी बड़ी है, फिर भी आप देखेंगे कि उस सूची को तैयार करने में पर्याप्त ईमानदारी से काम लिया गया है। महाभारत में अनेक बार इन अपवादों का सहारा लिया गया है। महाभारत में कौशिक का प्रख्यात उपाख्यान है। कौशिक एक सत्यवादी के रूप में प्रख्यात थे, परन्तु एक बार सत्य भाषण के परिणामस्वरूप ही उन्हें नरक वास करना पड़ा। बात यह हुई कि एक बार कौशिक एक जंगल से होकर कहीं जा रहे थे। रास्ते में कुछ व्यक्ति मिले, जो डाकुओं के भय से भागे आ रहे थे। भागते हुए वे एक ओर को निकल गये। उनके जाते ही डाकू भी आ पहुँचे और कौशिक से पूछने लगे कि वे व्यक्ति किधर गये। कौशिक ने उन्हें सही मार्ग बता दिया और डाकुओं ने उन सभी को पकड़ कर मार डाला। इस सत्य भाषण के परिणामस्वरूप उन्हें नरक में वास करना पड़ा।

यह बात सभी जानते हैं कि हिन्दुओं के समूचे जीवन पर पुरोहितों का अधिकार है। उनका समस्त जीवन यज्ञों और बलिदानों में ही बीतता है। इस प्रकार की बातों में हिन्दुओं की दृढ़ आस्था को सभी लोग जानते हैं, फिर भी महाभारत के नायक ने इस प्रकार कहने का साहस किया है।

‘यदि तराजू के एक पलड़े पर सहस्र अश्वमेध यज्ञ का फल रखकर दूसरे पर केवल सत्य भाषण का फल रख दिया जाय तो सत्य’ भाषण फल का पलड़ा सदा ही भारी होगा।’

दुष्यन्त का दरबार लगा है। शकुन्तला खड़ी है राजा ने उसे अपनी पत्नी मानने एवं गर्भस्थ शिशु को अपना मानने से इनकार कर दिया है। तनिक इस अवसर पर शकुन्तला की सुनिये। राजा ने उसकी प्रार्थना सुनने से भी इनकार कर दिया है। तब हारकर उसने किससे प्रार्थना की? उसने सर्वोच्च सत्ता से ही प्रार्थना की और वह सर्वोच्च सत्ता क्या थी? वह थी ‘आत्मध्वनि, आत्मा की ध्वनि’।

शकुन्तला ने कहा, ‘हे राजा, यदि आप सोचते हैं कि मैं अकेली हूँ तो आप अन्तर्गत के महापुरुष को नहीं जान पाये हैं। वह आपके प्रत्येक बुरे कार्य को देखता-परखता है। उसी के दृष्टि पथ में आप बुरा कार्य कर रहे हैं। दुष्कर्मी जानता है कि उसके दुष्कर्म को कोई नहीं देखता परन्तु देवता सब कुछ

1. महाभारत शान्ति पर्व में सत्य की महिमा सुनिये—

धर्मः सनातनस्सत्यम्, सत्यम् ब्रह्म सनातनम्।

वेदो यस्योपनिषत्सत्यम्, सत्यस्योपनिषदमः॥

दमस्योपनिषन्मोक्षः एतत् सर्वानुशासनम्। सत्य सनातन धर्म है, सत्य सनातन ब्रह्म है, सत्य वेदों का रहस्य है, सत्य का रहस्य संयम है और संयम से ही मोक्ष है। —अनुवादक

देखते हैं, अर्न्ततम में बसा हुआ पुरातन पुरुष सब कुछ देखता है।’

मेरा विचार है कि इतने उद्धरण पर्याप्त हैं। एक बार मैं फिर से कह देना चाहता हूँ कि मेरी यह इच्छा कदापि नहीं है कि मैं भारत के करोड़ों व्यक्तियों को करोड़ों देवदूतों के रूप में आपके समक्ष चित्रित करूँ, परन्तु मेरी ऐसी इच्छा अवश्य ही है कि करोड़ों भारतीयों के ऊपर असत्य भाषण का जो आरोप लगा दिया गया है वह निराधार है, इतना आप अवश्य समझ लें। यह केवल सत्य ही नहीं है वरन् सत्य के एकदम विपरीत भी है। जहाँ तक 1000 ई. के बाद की बात है, वहाँ तक तो मैं ऐसा ही कहूँगा। यदि आप किसी बालक को डरा दें तो वह अवश्य ही झूठ बोलने लगेगा। इसी प्रकार यदि आप करोड़ों व्यक्तियों के समूह को भय त्रस्त कर दें तो वह अवश्य ही आपके फन्दों से बचने के लिये असत्य का सहारा लेगा। सत्यता एक विलास की भावना है और शायद विलास की सर्वाधिक बड़ी सामग्री है। आप लोग विश्वास करें सत्यता सर्वाधिक व्ययशील सामग्री है। भाग्यवान् है वह व्यक्ति जो बाल्यावस्था से सत्यता का उपभोग करने का अवसर पाता रहे। हमारे जैसे समय में और इंग्लैण्ड जैसे स्वतंत्र देश में सत्य का ही सहारा लेना बहुत कुछ सरल है। इस समय और इस देश में असत्य का सहारा न लेने से भी हमारा काम चल सकता है, परन्तु ज्यों-ज्यों हमारी अवस्था बढ़ती जाती है, त्यों-त्यों सत्य भाषण की कठिनाइयाँ बढ़ती जाती हैं, त्यों-त्यों हम ‘केवल सत्य और सत्य के अतिरिक्त

अन्य कुछ भी नहीं’ कहने की कठिनाइयों को समझते जाते हैं। इस सत्य को भी हिन्दुओं ने हृदयंगम कर लिया था। वे भी जान गये थे कि सत्य, केवल सत्य, पूर्ण सत्य के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं कहना कितना कठिन है, किस प्रकार असम्भव के समीप है। शतपथ ब्राह्मण में एक छोटी सी कथा है। मेरे विचार से वह कथा बड़ी ही सारगर्भा है और उसमें सत्य की वास्तविक भावना है और सत्य भाषण की कठिनाइयों का उसमें पूर्ण दिग्दर्शन है। आरुण औपवेशी से उसके परिवार वालों ने कहा ‘आपकी अवस्था काफी अधिक हो गयी है अतः आप बलि-अग्नि की स्थापना करें। उसने उत्तर दिया ‘इस प्रकार तुम लोगों की इच्छा है कि मैं मौन व्रत धारण कर लूँ। क्योंकि अग्निस्थापना करने वालों को सदा सत्य ही बोलना चाहिये और मैं यह भली-भाँति जानता हूँ कि सत्य केवल सत्य और सत्य के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं कहना कितना कठिन है। इससे तो अच्छा है कि मैं मौन व्रत ही धारण कर लूँ। ‘अग्निस्थापना का कोई फल नहीं है यदि असत्य’ भाषण से न बचा जाये।’

मुझे सन्देह है कि संसार के किसी भी देश के प्राचीन साहित्य में सत्य केवल सत्य और सत्य के

1. संसार में क्या कभी किसी राजा ने इस प्रकार की घोषणा की है जैसे छान्दोग्य उपनिषद् के अश्वपति ने की थी—  
न मे स्तेनो जनपदे, न कदर्यो न मद्यपः।

नानाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरी स्वौरिणी कुतः॥

मेरे समस्त जनपद में एक भी चोर, कंजूस, शराबी, अग्निहोत्र न करने वाला अविद्वान् और व्यभिचारी पुरुष नहीं है फिर व्यभिचारिणी स्त्री भी कैसे हो सकती है? —अनुवादक

अतिरिक्त और अन्य कुछ नहीं कहने की कठिनाइयों की इतनी सुन्दर अभिव्यंजना की गयी है। हमारे भी देश में एक कहावत है, जिसका अर्थ है कि 'मौन सोना है और भाषण चाँदी' (**Silence is gold and speech is silver**) परन्तु इस कहावत में भी सत्य भाषण के कठिनाइयों की उतनी सुन्दर अभिव्यंजना नहीं है।

मैं यह समझता हूँ कि आने वाले कुछ महीनों के बाद ही आप लाखों भारतीयों के भाग्य विधाता बनेंगे। अतः मैं चाहता हूँ कि वहाँ जाने के पूर्व उन भ्रान्त धारणाओं को आपके मस्तिष्क से हटा दूँ जो निरन्तर बढ़ती रहकर उन्मादावस्था को पहुँच सकती है। राष्ट्रीय दुर्भावनाएँ सदैव ही पागलपन की ओर ले जाती हैं। मुझे स्वदेशवासियों में ऐसे व्यक्ति मिले हैं जो सभी प्रकार से मुझसे उच्च हैं। यदि आप भारत में भी ऐसे व्यक्ति खोजेंगे तो आपको मिलेंगे। यदि आपको उन व्यक्तियों से निराशा हो तो तत्क्षण ही आप उज्ज्वल चमड़ी वाले किसी ऐसे स्वदेशवासी का स्मरण करें, जिस पर पहले आप विश्वास कर सकते थे परन्तु अब नहीं कर सकते। अन्तर्राष्ट्रीय निर्णयों में हम सभी गलती कर सकते हैं। अभी पिछले ही दिनों किसी एक पत्रिका में एक उच्च राजनैतिक व्यक्ति के निम्नलिखित शब्दों को पढ़ने का संयोग मुझे मिला है—

‘हमारा अनुभव ही हमें सिखा सकता है कि नैतिकता विहीन जाति के लोगों को, सर्वाधिक आश्चर्यजनक प्रतीत होती है मानवों की वह जाति, जिसके शब्दों में पूर्ण विश्वास रखा जा सकता

है।..... देशी लोग नैतिकता को छोड़कर और किसी बात में हम से पीछे नहीं हैं। हमें चाहिये कि हम उन्हें चारित्रिक दृढ़ता की शिक्षा दें न कि साहित्य और विज्ञान की।’

यदि आप इन भावनाओं के साथ हिन्दुओं के पास जायेंगे तो न तो आप उन्हें चारित्रिक दृढ़ता ही सिखा सकेंगे और न विज्ञान या साहित्य ही। वे स्वयं अपनी स्मृतियों की ओर झुकेंगे, वे अपने ही साहित्य से प्रेरणा प्राप्त करेंगे और हमें कम से कम एक पाठ तो अवश्य ही सिखा सकेंगे और वह पाठ होगा सत्यता का, अपने प्रति सत्यता का। इसी को दूसरे शब्दों में हम यों भी कह सकते हैं कि इस पाठ को पढ़कर हम स्वयं अपने को ही उनसे छोटा मानने लगेंगे।

याज्ञवल्क्य ने क्या कहा है?

“यह हमारा धर्म नहीं है, और न ही यह हमारा चमड़ा है जो हमको पवित्र बना देता है। वास्तव में पवित्रता की साधना करनी पड़ती है। अतः किसी को भी किसी के प्रति ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिये जो वह स्वयं अपने प्रति दूसरों द्वारा किया जाना पसन्द नहीं करता”-

तनिक मनुस्मृति को भी देखिये, उसकी शिक्षा पर ध्यान दीजिये, “बुरा काम करने वाले समझते हैं कि उनकी बुराई को कोई नहीं देखता परन्तु देवताओं से कुछ नहीं छिपा है और सबसे बढ़कर तो हम स्वयं ही (आत्मा ही) अपने कार्यों को देखते रहते हैं।”



(क्रमशः)

## पाणिनि कन्या महाविद्यालय का संक्षिप्त परिचय

संस्थापिका— आचार्या डा. प्रज्ञा देवी जी एवं उनकी अनुजा  
पंडिता मेधा देवी जी

संक्षिप्त परिचय:—

18 जून, सन् 1971 में स्थापित यह महाविद्यालय आवासीय गुरुकुल पद्धति से संचालित है। यहाँ की दिनचर्या खान-पान, रहन-सहन पूर्णतः गुरुकुलीय है। भारत के सभी प्रान्तों की कन्यायें शताधिक संख्या में जाति वर्ग सम्प्रदाय के भेद से रहित होकर यहाँ शिक्षा ग्रहण करती हैं। यहाँ 5वीं से लेकर आचार्य (एम.ए.) पर्यन्त शिक्षा की व्यवस्था है।

2014 से यहाँ अन्तर्राष्ट्रिय महिला छात्रावास की सुविधा भी उपलब्ध है जिसमें त्रिपुरा, नेपाल आदि के अतिरिक्त कैलिफोर्निया, हालैण्ड, अमेरिका आदि की कन्याओं ने भी अध्ययन किया है। यहाँ अग्र शिष्य शिक्षा प्रणाली से पठन-पाठन होता है। इसी के साथ यहाँ आधुनिकता, प्राचीनता का मर्यादित सम्मिश्रण है एतदर्थ योग्य शिक्षिकाओं की व्यवस्था है।

**विशेष:—** वैदिक शिक्षा के साथ-साथ वर्तमान सामाजिक परिवेश के अनुरूप आधुनिक विषयों यथा- विज्ञान, अंग्रेजी, गणित, कम्प्यूटर आदि की शिक्षा भी यहाँ अनिवार्य रूप से दी जाती है। यहाँ जून मास के अन्तिम सप्ताह में 5वीं कक्षा उत्तीर्ण कन्या का प्रवेश होता है।

महाविद्यालय की विभिन्न प्रवृत्तियों व गतिविधियों का दिग्दर्शन आगे के पृष्ठों में पठनीय है।

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रिय वेद विद्या प्रतिष्ठान उज्जैन द्वारा संचालित  
**पाणिनि कन्या वेद विद्यालय**

**उद्देश्य:-**

1. कन्याओं को वेद विदुषी बनाना।
2. कन्याओं को सस्वर चारों वेद कण्ठस्थ कराना।
3. वेद के छः अंगों का सांगोपांग अध्ययन कराना।
4. कन्याओं को वेद प्रचारिका बनाना।
5. कन्याओं के वेदाध्ययन के सम्बन्ध में फैली भ्रान्तियों को दूर करना।
6. कन्याओं को वैदिक कर्मकाण्ड में निपुण करना तथा श्रौत, ब्राह्मण ग्रन्थों के माध्यम से उनके वैज्ञानिक रहस्यों का अध्ययन कराना।
7. सम्पूर्ण विश्व में वैदिक माहात्म्य की प्रतिष्ठा करना।
8. गार्गी, घोषा, अपाला प्रभृति प्राचीन वैदिक ऋषिकाओं की मान्यता एवं परम्परा को पुनर्जीवित करना।

## पाणिनि कन्या महाविद्यालय की विशिष्ट गतिविधियाँ

1. **प्राच्य विद्या शोध केन्द्र** के माध्यम से वेदों में निहित विज्ञान पर शोध व भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण एवं संवर्द्धन।
2. **वेद विद्यालय** (महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान उज्जैन द्वारा प्रकल्पित 8वर्षीय पाठ्यक्रम)
3. जनवरी 2018 से अस्सी घाट पर प्रति पूर्णिमा को कलानिधि द्वारा आयोजित **शास्त्रार्थ परम्परा** यहाँ की कन्याओं द्वारा ही संचालित हो रही हैं।
4. **सुबह-ए-बनारस** (अस्सीघाट में) प्रतिदिन गत 4 वर्षों से कन्याओं द्वारा प्रातःकालीन देव स्तुति प्रार्थना मंत्र, यज्ञ सम्पादन।
5. **महर्षि पाणिनि-प्रज्ञा अनुसंधान केन्द्र** (इसी के अन्तर्गत पुस्तकालय, वाचनालय तथा प्राच्य विद्या शोध केन्द्र आदि संचालित हैं)।
6. **शब्द ब्रह्म उपासना केन्द्र 'महर्षि पाणिनि मन्दिर'** (जहाँ पाणिनि विरचित अष्टाध्यायी के चार हजार सूत्र संगमरमर के पत्थरों पर अंकित हैं इसका उपयोग सभागार व विभिन्न कक्षादि संचालन के लिये होता है)।
7. **वेद विज्ञान प्रयोगशाला**। (वैदिक विज्ञान के क्रियात्मक प्रशिक्षण व प्रदर्शन हेतु)।
8. **अन्तर्राष्ट्रिय महिला छात्रावास** (8वीं कक्षा से ऊपर की छात्राओं के लिये)
9. **अध्यात्म योग साधना प्रशिक्षण** (प्रतिदिन प्रातः 6-7 बजे तक)।
10. **संगीत विद्यालय** (गायन, वादन-सितार, वायलिन, बाँसुरी, गिटार, तबला) प्रयाग संगीत समिति का छः वर्षीय पाठ्यक्रम संगीत प्रभाकर पर्यन्त।
11. **शस्त्र-अभ्यास** (लाठी-भाला, तीर-तलवार आदि चलाना कन्यायें अनिवार्य रूप से सीखती हैं)।
12. **जूडो-कराटे, ताइक्वाण्डो, बॉक्सिंग** आदि का विशेष प्रशिक्षण।
13. **कम्प्यूटर लैब, सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र**।
14. **महर्षि पाणिनि-प्रभा मासिक पत्रिका का प्रकाशन**।

## पाणिनि कन्या महाविद्यालय की भावी योजनायें एवं सहयोग

वर्तमान में निम्नलिखित योजनाओं की ओर आपका ध्यान आकृष्ट कराते हुए हम आपके संरक्षण एवं मार्गदर्शन के कृपाकांक्षी हैं—

1. वैदिक संग्रहालय की स्थापना।
2. प्राच्य विद्या शोध केन्द्र को गति देना।
3. यूनेस्को द्वारा घोषित वैश्विक अमूर्त धरोहर को विश्व पटल पर स्थापित करना।
4. आयुर्वेदिक पौधशाला एवं नक्षत्र वृक्षों का प्रबन्धन।
5. वेधशाला का निर्माण।
6. शास्त्रार्थ विद्या पीठ की स्थापना।
7. प्राकृतिक चिकित्सालय का निर्माण एवं प्राकृतिक चिकित्सा का विकास।
8. विद्यालय परिसर में भारतीय दर्शन के दृष्टिगत शास्त्रार्थ/संगोष्ठियों/ व्याख्यान/ प्रदर्शन आदि की व्यवस्था।
9. **प्रकाशन विभाग की स्थापना-** मासिक पत्रिका व अन्य पाठ्यक्रम की संस्कृत वेद-व्याकरण से सम्बन्धित लघु पुस्तिकायें ट्रैक आदि के प्रकाशन हेतु।

➔ **विभिन्न गतिविधियों के संचालन हेतु 40 वर्ष के ऊपर की योग्य महिला प्रशिक्षिकाओं का सहयोग अपेक्षित है, जिनके लिये आवास, भोजन की सुविधा उपलब्ध रहेगी। आप अपना आर्थिक सहयोग भी दे सकते हैं।**

**सम्पर्क सूत्र :- 9235539740, 9235604340**



3 से 6 अप्रैल 2018, डी.ए.वी. महाराजगंज, सिवान में आयोजित शिविर में कन्याओं के साथ संजीवनी पाण्डेय



21-23.12.2017, गुरुकुल आमसेना उड़ीसा के स्वर्ण जयन्ती समारोह में सम्मानित गुरुकुलों की आचार्याएँ



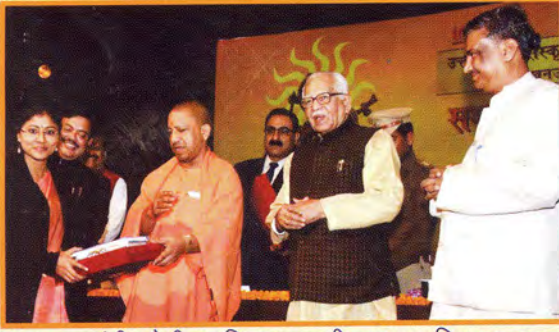
अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन हरिद्वार में सम्मानित आचार्या जी व विशाल शोभायात्रा में बैण्ड-बाजे के साथ शोभायात्रा का नेतृत्व करती पाणिनि कन्यायें



10,11,12 नवम्बर पाणिनि महोत्सव में "वैदिक शिक्षा और नारी" विषयक संगोष्ठी का दीप प्रज्ज्वलन कर शुभारम्भ करती सम्मानित अतिथि, मुख्य वक्ता डॉ. उत्तमा मति अजमेर, नवीनकक्ष का आहुति देकर उद्घाटन करती डॉ. ज्योत्स्ना श्रीवास्तव



6.9.11.2017, पाणिनि कन्या महाविद्यालयीय ज्योतिष कार्यशाला के उद्घाटन पर उद्बोधन देते आर्ष तिथि पत्रक पंचांग के निर्माता श्री दार्शन्य लोकेश जी, दिल्ली व कार्यशाला के समापन पर प्रमाण पत्र प्राप्त करती पाणिनि छात्राएँ



मा० मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी व महामहिम राज्यपाल के हाथों पुरस्कृत विद्यालय की स्नातिका डॉ. प्रतिभा आर्या



मेघालय के राज्यपाल जी को सम्मान व स्मृति चिन्ह देते पाणिनि परिवार के सदस्य



27 जुलाई 2018, 35 कन्याओं का यज्ञोपवीत व वेदारम्भ संस्कार कराती आचार्या नन्दिता शास्त्री व उपाचार्या प्रीति विमर्शिनी



सुबहे बनारस कार्यक्रम में कमिश्नर नितिन रमेश गोकर्ण व डी.एम. श्री योगेश्वर राम मिश्र के साथ सुबहे बनारस के सम्मानित सदस्य व पाणिनि कन्याएँ



23 सितम्बर 2018, "सुबहे बनारस" कार्यक्रम के 400 दिन पूर्ण होने पर उत्साहित सभी सदस्य व वेद मंत्रोच्चारण करती पाणिनि कन्याएँ